अगस्त २००८

दादावाणी

किमत रु.१०

जगत में कोई
दोषी है ही नहीं।

सामनेवाला
शुद्धात्मा ही है,
अकर्ता ही है,
निर्दोष ही है।

अपने ही कर्मों
का उदय है,
सामनेवाला
निमित्त मात्र है।

आपकी ही भूलें
आपकी मालिक हैं।

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: ३, अंक : १०
अखंड क्रमांक : ३४
अगस्त, २००८

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901-03
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १०० डॉलर
यु.के. : ७५ पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : 10 डॉलर
यु.के. : 7 पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से पेयेबल अहमदाबाद का भेजे।

दादावाणी

जगत निर्दोषता के प्रमाण, ज्ञानी की दृष्टि से

संपादकीय

दैनिक जीवन व्यवहार में घर में परिवारजनों के साथ, मित्रों या सगे-संबंधिओं के साथ, व्यापार-धंधे में भागीदार, व्यापारी या ग्राहकों के साथ, धर्मस्थानको में साधु, संतों और भक्तों के साथ, अध्यात्म में गुरु-शिष्यों या सहाध्यायिओं के साथ, ऐसे आपसी व्यवहारों में अनेक बार, अनेक प्रसंगों में यह सवाल उठते हैं कि मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? ऐसा किसने किया? क्यों किया? सत्ता, संपत्ति या बुद्धि के ज़ोर पर सामनेवाला व्यक्ति, मेरा कोई दोष नहीं होने पर भी मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करता है? ऐसे अनेक प्रश्न उठते हैं, और सच्ची समझ के अभाव के कारण मन का समाधान नहीं होने से दूसरों को गुनहगार समझकर, प्रतिआक्षेप करके और फिर इसके कारण द्वेष, अभाव, तिरस्कार, शंका आदि का शिकार होकर, मनुष्य वास्वविकता से विमुख होकर जीवन में से सुख, आनंद और विश्वास खो देता है।

धर्म के इतने व्याप के बावजूद मनुष्य के जीवन में सच्चे सुख और शांति का अभाव क्यों है? अध्यात्म की श्रेणियाँ चढ़ने का दावा करनेवाले मुमुक्षुओं के जीवन में आनंद की कमी क्यों है? क्या इन जटिल समस्याओं का सही समाधान इस दुषमकाल में प्राप्त होना संभव है? हाँ, अवश्य। यदि सही समझ की प्राप्ति हो, तब इन जटिल समस्याओं का समाधान इस दुषमकाल में भी सहज है।

वर्तमान के अद्‌भूत आश्चर्य समान अक्रमज्ञानी पूज्य दादा भगवान ने खुद निर्दोष दृष्टि पाकर जगत को निर्दोष देखा और अपने सत्संग में दृष्टि निर्दोष करने की विस्तृत समझ प्रदान की है, जिसका गहराई से अध्ययन करने पर हम भी अपनी दृष्टि निर्दोष कर सकते हैं।

संसार में सुखी होने का रहस्य समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि मन-वचन-काया से किसी जीव को किंचित्‌मात्र दु:ख नहीं हो इस जागृति के साथ व्यवहार निभाएँ, और फिर भी यदि किसी को हम से दु:ख हो जाए तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए और यदि किसी से हमें दु:ख हो तो उस व्यक्ति के प्रति निर्दोष दृष्टि रखने का अभ्यस्त होना चाहिए।

भगवान की दृष्टि से, ज्ञानी की दृष्टि से वास्तव में जगत संपूर्ण निर्दोष ही है। इसके लिए ज्ञानीपुरुष ने अनेकों प्रमाण जुटाए हैं। जिनमें से कुछ प्रस्तुत अंक में संकलित किए गए हैं। **प्रस्तुत प्रमाणों को अभ्यास और गहरे मनन, चिंतन हेतु क्रमांक देकर तथा रेखांकित करके अलग करने का हमारा विनम्र प्रयास आपको इस दिशा में प्रगति करने में अवश्य सहायक सिद्ध होगा।** आइये, ज्ञानीपुरुष द्वारा दिए गए इस प्रमाणों को आत्मसात् करके, अपनी दृष्टि निर्मल बनाकर, जगत को निर्दोष देखने का पुरुषार्थ करने में जुट जाएँ और मोक्षमार्ग सरल बनाकर मुक्ति का आस्वाद लें।

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

जगत निर्दोषता के प्रमाण - ज्ञानी की दृष्टि से

तत्त्वदृष्टि से जगत निर्दोष

हम सारे जगत को निर्दोष देखते हैं। आपको भी सिखलाते हैं कि जगत निर्दोष है और इग्ज़ैक्टली (यथार्थ रूप से) ऐसा ही है। कोई कहेगा कि 'प्रुफ (प्रमाण) दीजिए', तो शत प्रतिशत प्रुफ देने को तैयार हूँ। जो खुद ऐसे प्रमाण जुटा सकते हैं, तब फिर उनकी प्रतीति में क्या होगा? केवल प्रतीति में नहीं, किंतु वर्तन में भी ऐसा ही होता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे सारे जगत को निर्दोष कब देख पाएँ?

दादाश्री : आपको उदाहरण देकर समझाता हूँ, आपकी समझ में आ जाएगा। एक गाँव में एक सुनार रहता है। पाँच हजार की आबादीवाला गाँव है। आपके पास सोना है। वह सोना लेकर आप बेचने गए। वह सुनार आपके सोने को कसौटी पर घिसेगा, देखेगा। आपका सोना चांदी जेसा दिखता है। [१] सोना कसौटी पर खरा नहीं उतरता फिर भी सुनार आपसे लड़ता नहीं कि सोना ऐसा बिगाडकर क्यों लाए हैं? क्योंकि, उसकी दृष्टि सोने में है। और यदि दूसरों के पास जाएँ तो वे डाँटेंगे कि, 'ऐसा क्यों लेकर आए हैं?' यानी जो जौहरी है वह डाँटता नहीं। [२] मतलब यदि आप सोना ही माँगते हैं, तो इसमें जो सोना है उसे ही देखिये न? उसमें दूसरा जो भी है उसे क्यों देखते हैं? [३] 'ऐसा बिगड़ा सोना क्यों लाए?', ऐसे यदि लड़ाई-झगड़े में पड़े तो उसका कहाँ अंत आनेवाला है? [४] हमें अपनी दृष्टि से देख लेना चाहिए के इसमें इतना सोना है और इतने रुपये मिलेंगे। आपकी समझ में आया न? इस दृष्टि से मैं सारे जगत को निर्दोष देखता हूँ। सुनार इस दृष्टि से, कैसा भी सोना रहा तब भी सोना ही देखेगा न? अन्य कुछ देखना ही नहीं न? और लड़े भी नहीं।

हमने सुनार देखे हैं, उसे देखकर मेरे मन में विचार आता कि यह ऐसे लड़ता क्यों नहीं कि, 'आप सोना बिगाड़कर क्यों लाए हैं?' [५] उसकी दृष्टि कितनी सुंदर है! लड़ता भी नहीं है और 'इसका सोना अच्छा है' ऐसा भी नहीं कहता। मगर ऐसा ज़रूर कहे कि, 'आइये, बैठिये, चाय-पानी लेंगे न?' अरे! मिलावटवाला सोना है फिर भी चाय पिलाता है। [६] ऐसा इसमें (हर एक जीव में) भी क्या है? भीतर तो शुद्ध सोना (शुद्धात्मा) ही है न? [७] तात्त्विक दृष्टि से देखें तो दोष किसीका नहीं है।

सारी क्रियाएँ कुदरत की ही

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला दोषी नहीं दिखाई दे इसलिए, 'यह प्रकृति करती है' ऐसी समझ से काम लेता हूँ। क्या यह बराबर है?

दादाश्री : वह 'फर्स्ट स्टेज' (पहले स्तर) की बात है, मगर [१] अंतिम बात में ऐसा कुछ भी होता ही नहीं है। [२] आत्मा इसका जानकार ही है। अन्य कुछ भी नहीं है। उसके बजाय [३] खुद मानकर बैठा है कि सामनेवाले ने ही किया है ! [४] यह केवल 'रोंग बिलीफ़ ' ही है।

प्रश्नकर्ता : एक अकेली संतान को मार डाला...

दादाश्री : वह मरता ही नहीं है। [५] जो मूल स्वभाव है, जो 'मूल वस्तु' है, वह मरता ही नहीं

है। ६ यह तो, जो नाशवंत चीजें हैं उसका नाश होता ही रहता है।

जिनकी समझ कम होती है वह हिसाब सँजोकर कहेगा, 'हिसाब होगा' वर्ना, ७ उसे 'मेरा बेटा है' ऐसा होता ही नहीं न?

८ भगवान की भाषा जिसकी समझ में आई, उसे तो यह सारा जगत निर्दोष ही दिखाई देगा न? ९ कोई फूल चढ़ाए तब भी निर्दोष दिखाई दे और पत्थर मारे तब भी निर्दोष दिखाई दे। १० एक ने मार डाला और एक ने बचाया। मगर दोनों निर्दोष दिखाई दें, विशेषता नहीं दिखाई देती इसमें।

आप हमारे ११ ज्ञान से समझना चाहें तो, 'व्यवस्थित है', 'हिसाब है' ऐसा आपको समझना पड़े। इससे आगे जाने पर 'मूल वस्तु' समझ सकेंगे। १२ 'बचानेवाला कोई बचा नहीं सकता, मारनेवाला मार नहीं सकता। सब कुदरत का काम है यह।' 'व्यवस्थित' है, मगर 'व्यवस्थित' के ऊपर के अवलंबन के तौर पर यह कौन कर रहा है? उस सारे हिस्से को खुद जानें, कि सारी कुदरत की ही क्रिया है।

गलन का रहस्य

१ 'ज्ञानीपुरुष' यह कहना चाहते हैं कि लोग जिसे उदयकर्म कहते हैं, वह सब गलन (डिस्चार्ज) है। उसमें पूरण (चार्ज) कुछ नहीं है। २ ये पाँच इन्द्रियाँ सभी उदय के अधीन हैं। जब ये पाँच इन्द्रियाँ ही उदय के अधीन हैं तब फिर ३ इन्द्रियों के कर्म तो उदय के अधीन ही होते हैं न? ४ इन पाँच इन्द्रियों की शक्ति उदय के अधीन है, तो फिर इन्द्रियाँ जो देखें, जानें उसमें नया कहाँ से होता है? यह बात समझ में आए ऐसी है या नहीं ?

यानी, ५ सारा जगत गलन स्वरूप है और वह भी फिर 'व्यवस्थित' भाव से है। ६ यह मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सभी 'व्यवस्थित' के अधीन हैं। ७ उसके अधीन हो, फिर आपको उसका रक्षण करने की ज़रूरत नहीं है न? ८ आपको तो कुछ करने का ही नहीं रहा न? केवल 'देखा' करना कि 'व्यवस्थित' क्या करता है, वह। हमारी यह 'व्यवस्थित' की खोज-बीन बहुत 'इग्ज़ैक्ट' (यथार्थ) है। 'पोइन्ट टु पोइन्ट' तक 'इग्ज़ैक्ट' है। इसलिए तो हम जो इसे गलन बता रहे हैं, वह आपको अपने 'ज्ञान' में रहने के लिए, यह सब 'जैसा है वैसा' स्पष्टीकरण देते हैं। तभी तो यह 'अक्रम विज्ञान' खुला करना पड़ा है।

जगत चले नियम से ही

हम कोटि अवतारों की खोज-बीन करके जगत को इग्ज़ैक्ट जैसा है वैसा बता रहे हैं, कि प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों आधाररहित अवलंबन हैं और 'व्यवस्थित' वही सच्चा अवलंबन है, फेक्ट बात है, साइन्टिफिक है।

'व्यवस्थित' माने क्या ? मात्र साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स से जो-जो होता है वह व्यवस्थित है। 'व्यवस्थित' वह सर्व अवस्थाओं में संपूर्ण समाधानकारी ज्ञान है। मैं आपको इसका सामान्य उदाहरण बताता हूँ। यह काँच का गिलास है जो आपके हाथ से छूटने लगा। फिर आपने इधर से उधर, उधर से इधर हाथ हिलाकर उसे अंत तक बचाने का प्रयत्न किया और इसके बावजूद वह नीचे गिरा और टूट गया। तो उसे किसने तोड़ा? १ आपकी तो ज़रा-सी भी इच्छा नहीं थी कि गिलास टूटे। उलटे २ आपने तो अंत तक बचाने का प्रयत्न किया था। ३ तब क्या गिलास की टूटने की इच्छा थी? नहीं, उसे तो ऐसा होता ही नहीं। ४ दूसरा कोई तोड़नेवाला हाज़िर नहीं है, तो फिर तोड़ा किसने? व्यवस्थित ने। व्यवस्थित जो है वह इग्ज़ैक्ट नियम से चलता है। वहाँ अँधेर नगरी नहीं है। ५ यदि 'व्यवस्थित' के नियम में गिलास का टूटना नहीं होता तो ये काँच के गिलास के कारखाने कैसे चल पाते? किंतु 'व्यवस्थित' को आपका भी निर्वाह करना है और कारखाने भी चलाने हैं और हजारों मझदूरों का भी निर्वाह करना है। इसलिए ६ नियम से गिलास टूटे ही, बिना टूटे रहता ही नहीं। तब लोग,

टूटने पर कुढ़न और संताप किया करे। अरे! नौकर के हाथों टूटा हो और चार-पाँच मेहमान बैठे हों तो मन में व्याकुल होता रहे कि कब मेहमान जाएँ और कब मैं इस नौकर को चार तमाचे रसीद कर दूँ। और फिर, ऐसा करे भी। और यदि उसे ऐसा समझ में आ गया हो कि गिलास नौकर ने नहीं 'व्यवस्थित' ने तोड़ा है तो क्या उसे कुछ असर होगा? संपूर्ण समाधान रहेगा या नहीं रहेगा? ७ वास्तव में नौकर बेचारा निमित्त है। उसे ये सेठ काटने दौड़ते हैं (दोषी मानकर डाँटते हैं)। निमित्त को कभी भी नहीं काटना चाहिए। अरे, निमित्त को काटकर तू अपना अहित कर रहा है। मूल रूट कॉज़ (मूल कारण) खोज निकाल न! तब तेरा समाधान होगा।

नौकर निमित्त, हिसाब खुद का ही

नौकर से यदि गिलास टूट गए हों तो भी कुढ़न किया करे, नौकर को भला-बुरा कहे कि, 'क्या तेरे हाथ टूटे हुए हैं, पैर टूटा हुआ है?' उस समय १ ऐसा सोचना चाहिए कि 'यदि मैं खुद नौकर की जगह होता तो मेरी क्या गत होती? २ मुझे कितना दु:ख होता?' क्या ऐसा कोई सोचता है? फिर नौकर के मन में ऐसा होता हो कि, 'ये सेठजी बिना वजह मुझे डाँटते हैं, मेरा गुनाह नहीं है। मैं नौकर हूँ और नौकरी करता हूँ इसलिए मुझे डाँटते हैं', बेचारे को ऐसा होगा। यानी, यह नासमझी के कारण गरीब लोगों को श्रीमंत लोग दु:ख पहुँचाते हैं, वर्ना ३ क्या कोई नौकर जान-बूझकर गिलास तोड़ता होगा? और यदि ४ वही तोड़ता हो तब क्या वह रोज नहीं तोड़ता? ५ जब वह हाथों से सँभाल नहीं पाए तब ही टूटेंगे न? ६ इस जगत में कोई किसी वस्तु को तोड़ता ही नहीं, यह सब आपका ही हिसाब चुकता हो रहा है। ७ उसमें नौकर तो बेचारा निमित्त बन जाता है।

जेब कटी, वहाँ हकीकत क्या है?

१ यह क्रोध-मान-माया-लोभ ही दु:ख देतें हैं, बाहरवाला कोई दु:ख नहीं देता है। क्रोध-मान-माया-लोभ हमें ऐसा सिखलाते हैं कि यह दु:ख है, ऐसी आपको उलटी पट्टी पढ़ाए, वर्ना २ बाहर तो जगत में कोई दोषी है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : हमारा कर्म दोषी है, ऐसा ही है न?

दादाश्री : नहीं, ३ आप खुद ही दोषी हैं, अन्य किसीका भी दोष नहीं है। आपकी जेब कट जाए तो ४ जेब काटनेवाले का दोष नहीं है, आपके दोष को लेकर ही आपकी जेब कटती है। ५ पूर्वजन्म के सारे हिसाब चुकता होते हैं। वह जेब काटनेवाला तो इस समय मौज उड़ाता हो, मगर आप आज पकड़े गए।

प्रश्नकर्ता : कोई हमारे पास से पच्चीस रुपये ले जाए और वापस नहीं करे तब क्या वह भी पूर्व जन्म का ऋण हम चुकता करते हैं?

दादाश्री : ६ सारा हिसाब ही है, इसलिए चिंता मत करना। वह व्यक्ति सामने से आता हो तो भी उसके प्रति चिढ़ मत रखना, वर्ना एक तरफ तो रुपये गए और फिर ऊपर से उसके साथ कर्मबंधन होगा।

प्रश्नकर्ता : 'वह ले गया वह ठीक हुआ', क्या ऐसा कहें?

दादाश्री : 'ले गया वह ठीक हुआ' ऐसा फिर नहीं बोलना, वहाँ मौन रहना। ७ 'ले गया वह ठीक हुआ' ऐसा बोलें तब भी गुनाह कहलाए। ८ अंदरूनी तौर पर समझ लेना कि यह हमारी भूल का परिणाम है। मुँह से कुछ नहीं बोलना वर्ना वह आदमी फिर सवार हो जाएगा! ज़बानी तौर पर तो ऐसा ही बोलना कि, 'भैया, आपको ठीक लगे उतने तो वापस कीजिए कुछ' उतना कहना। अंदरूनी तौर पर समझना कि आएँगे तो अच्छा है और नहीं आए तो हर्ज नहीं, पर ज़बानी तौर पर तो उसे वापस करने को कहना चाहिए।

मगर ९ बिना हिसाब के तो कोई मिलता ही नहीं न? १० अन्य किसीको (उधार) नहीं दिए और उसी को क्यों देना हुआ? मतलब हिसाब है। बिना हिसाब के कोई मिलता ही नहीं है।

दादावाणी

हमें तो सारा जगत निर्दोष दिखाई दे। दोषी कोई है ही नहीं, ऐसा सारा जगत दिखाई दे। कोई दोषी दिखता है वह अभी हमारी भूल है। कभी न कभी तो निर्दोष देखना पड़ेगा न? हमारे हिसाब से ही है यह सब, इतना संक्षिप्त में समझ जाइये न, तब भी बहुत काम आएगा।

आत्मा की जेब नहीं होती। यदि आप आत्मा हैं तो आपकी जेब नहीं होती, तो आपका कुछ कटता भी नहीं। जो कटी वह 'चंदुभाई' की जेब कटी, पर आप कहते हैं 'मेरी जेब कटी,' मतलब आप 'चंदुभाई' हो गए, वह मिथ्यात्व है।

जेबकतरा जेब काटता है तो उसमें गलत नहीं हुआ है। यह जगत एक मिनट के लिए भी नियम से बाहर नहीं चला है। फिर भी सब कहते हैं कि, 'ये लोग नालायक हो गए हैं।' नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। यह सब कुदरत ही करवाती है और ये सारे मनुष्य तो बीच में निमित्त है और वे इगोइज़्म करते हैं कि, 'मैंने किया, मैंने किया', इतना ही। मतलब किसीका दोष मत निकालना, क्योंकि यदि दोष निकालेंगे तो फिर आप जिम्मेदार होंगे। जिम्मेदारी नहीं लेनी है न?

अन्डरहैन्ड को 'डिसमिस' नहीं करते

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मेरी नौकरी पुलिस की है, हमारे पेशे में करप्शन (भ्रष्टाचार) बहुत चलता है, जो मुझे भी लागू होता है, ऐसे में क्या करना?

दादाश्री : वे लोग जो करप्शन करते हैं, वे सड़े हुए बीज बोते हैं, जिसके उगने पर पत्ते भी सड़े हुए आते हैं। पत्तों में छेद होते हैं, ऐसा आपने देखा है न? देखिये अजूबा है न? ईमानदार लोगों को इन लोगों की और से परेशानी है। यदि कोई ईमानदार आया तो उसे जीने नहीं देते, मानों यह भूत कहाँ से आया? अफ़सर भी जाने कि यह बीच में काँटा आया। हर जगह ईमानदार को परेशानी है, मगर भगवान और कुदरत ईमानदार के साथ ही खड़े रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : गवर्नमन्ट की ऊँची पोस्ट (होदे) पर हैं हम, हमारा कर्मचारी ऐसे गलत काम करता हो तब हम तय करते हैं कि उसके ऊपर कार्रवाई चलाना और उसे डिसमिस (पदच्युत) कर देना। क्या यह ठीक है?

दादाश्री : डिसमिस नहीं करना। हमें उसे सूचना देनी चाहिए कि, 'भैया, ऐसा नहीं होना चाहिए।' और आपका तो गवर्नमन्ट का विभाग है इसलिए डिसमिस तो कर ही नहीं सकते। आपके ऊपर भी आपको कोई डिसमिस करनेवाला है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : है।

दादाश्री : तब फिर डिसमिस करने के ऐसे जोखिम सिर पर मत लेना। हमारे ऊपरी अफ़सर ने यदि ऐसा करने को कहा हो तो भी हमें उसे सँभाल लेना चाहिए, आखिर झूठ बोलकर भी उस बात को सँभाल लेना। यदि आपको डिसमिस करने की बात आपके सुनने में आई, तो आपको, डिसमिस शब्द सुनते ही बहुत बड़ा असर होगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होगा, सब को होता है।

दादाश्री : तब फिर उस बेचारे को कितना असर होगा? इस जगत में किसीको क्यों दुःख पहुँचाना? हम नियम से बरतें, नियम में छटकने की कई करामात होती हैं। माइल्ड (नरम) भाषा होती है या नहीं होती? हम ऐसा कहें कि, 'आपको डिसमिस क्यों नहीं किया जाए इसका खुलासा दीजिए।' और, 'हम आपको डिसमिस कर देंगे' यदि हम ऐसा कहें, तब इन दो वाक्यों में अंतर है या नहीं? इसलिए माइल्ड भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए। हमारे हाथ से कुछ गलत हो जाए उसमें हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, पर फिर भी उसे छोड़ देना, किसीकी नौकरी या पेट पर लात मत मारना (क्योंकि उसका सारा परिवार उस पर निर्भर है)।

हिसाबी है यह जगत

प्रश्नकर्ता : कईबार ऐसा होता है कि सच्चे रास्ते पर चलनेवालों को संसार में कई मुश्किलों को सहना पड़ता है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : [१] मुश्किलें तो हमारी ही खड़ी की हुई हैं, [२] अन्य किसीने कोई मुश्किल खड़ी ही नहीं की है। [३] इस जगत में कोई भी मनुष्य किसीको मुश्किल में रख ही नहीं सकता है। जो मुश्किलें आती हैं वे सारी खुद की ही खड़ी की हुई हैं। [४] लोग आपको आपकी इन्छानुसार मुश्किलें खड़ी होने में मदद करते हैं। [५] लोग आपकी जेब काटते हैं, वे आपकी मदद करते हैं। तब फिर आप उसे मुश्किल क्यों कहते हैं? वह कैसे हैल्प करता है? [६] आपको कर्म से छुड़वाने हेतु वह बेचारा आपकी जेब काटता है और तब आप कहते हैं कि इसने मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर दी। [७] अरे! मुसीबत कहाँ है, यह तो आपका छुटकारा करवाता है। यानी [८] दुनिया में कोई मनुष्य मुसीबत खड़ी कर सकें ऐसा है ही नहीं। आपका ही हिसाब है यह, [९] उसमें लोग तो केवल निमित्त हैं।

हिसाब, बहीखातों के

'इस संसार में सुख नहीं है' क्या तूने ऐसा हिसाब कभी लगाया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी।

दादाश्री : जिसे इस संसार के बहीखातों का लेखा-जोखा निकालना आया उसको मोक्ष की तीव्र इच्छा होगी। मगर यह लेखा-जोखा निकाले तब ही पता चले कि सुख किसमें है? क्या बाप होने में सुख है? पति होने में सुख है?

[१] यह संसार तो समझने जैसा है। चाचा क्या है? मामा क्या है? पति क्या है? पत्नी क्या है? वे तो बहीखाते के हिसाब हैं। मगर यह तो जाना ही नहीं है न! यदि जाने तो फिर हिसाब पूरा करता जाए। मगर नहीं जानने के कारण एक हिसाब यदि चुकता करे तब दूसरा हिसाब बढ़ाता जाए। और यदि मामा का हिसाब बाकी हो तो [२] किसी भी निमित्त से वह हिसाब चुकता हुए बगैर रहनेवाला नहीं है!

जगत दु:ख भुगतने के लिए नहीं है, सुख भोगने के लिए है। [३] जिसका जितना हिसाब हो उतना उसे मिलता है। [४] कुछ लोग सिर्फ सुख भोगते हैं, ऐसा क्यों? कुछ सिर्फ दु:ख भोगते हैं, ऐसा क्यों? खुद ऐसा हिसाब लाया है, इसलिए। समाचारों में रोज़ाना आता है कि, 'आज टैक्सी में दो शख्सों ने इन्हें लूट लिया, फलाँ जगह पर सेठानी को बाँधकर लूट चलाई।' यह पढ़कर हमें ऐसे भड़कने की कोई ज़रूरत नहीं है कि, [५] 'यदि मैं भी लूट लिया जाऊँगा तो?' यह विकल्प करना, वही गुनाह है। उसके बजाय आप सहजता में रहा कीजिए! [६] आपका हिसाब होगा तो ले जाएगा वर्ना कोई आपको कुछ नहीं कर सकता। [७] जो भुगते उसकी भूल। इसलिए आप निर्भय होकर घूमें। अखबारवाले तो लिखा करें, क्या इस कारण हम डर जाएँ? [८] एक लाख मनुष्य जहाँ लूट लिए गए हों और यदि आप उस जगह से होकर निकलें, तब भी वहाँ आप डरना नहीं। क्योंकि बिना हिसाब के, कोई आपको हाथ तक नहीं लगा सकता।

हमें किसी ज्योतिषी ने हाथ देखकर बताया हो कि आप पर चार घातें (बड़े संकट) हैं। तो चार घातों में हमें सावधान रहना चाहिए। अब इनमें से एक घात गई तो हम आनंद मनाएँ कि जमापूँजी में से एक कम हुई। वैसे [९] अपमान, गालियाँ वे सभी हमारे पास आएँ तो आनंद मनाना कि जमापूँजी में से एक दु:ख कम हुआ। मगर लोग तो अवस्था से लगे रहें। ऐसा नहीं होना चाहिए। [१०] किसी के साथ हजार गालियों का हिसाब हो वह एक गाली सुनाए तो हम कहें कि हजार में से एक तो कम हुई। अब ९९९ गालियाँ शेष रहीं। [११] वह जो बोझ बना रहता है कि, 'मुझे गाली क्यों दी?' वह नहीं होना चाहिए।

[१२] मान के समय जैसा आनंद रहता है अपमान

के समय भी वैसा आनंद हाज़िर रहना ही चाहिए। अपमान के समय आनंद हाज़िर क्यों नहीं रहता? [१३] 'अपमान के समय भी आनंद हाज़िर रहे ही', ऐसा नहीं कहने से वह हाज़िर नहीं रहता। इसलिए हम 'आनंद रहे ही' ऐसा कहें ताकि वह रहे। भीतर आत्मा में अनंत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। जैसा तय करें वैसा हो सकें, ऐसा है।

यदि आप अपने दु:ख 'दादा' को सौंप दें तब तो काम ही बन जाए। हम सारे जगत के दु:ख लेने आए हैं। जिसे सौंपने हैं वे इस 'दादा' को सौंप जाएँ। आप सब 'दादा' से कहें कि, 'दादा हम तो शुरू से ही पागल हैं इसलिए अब आप हाज़िर रहना।' इसलिए फिर 'दादा' अवश्य आएँ।

पाप-पुण्य के परिणाम

[१] इस दुनिया का नियंता कोई नहीं है, यदि कोई ऐसा चलानेवाला होता तो पाप-पुण्य की ज़रूरत ही नहीं है। पाप और पुण्य का क्या मतलब है? जीवमात्र का कुछ भी नुकसान करना उससे पाप बँधता है और किसी भी जीव को कुछ भी सुख पहुँचाना उससे पुण्य बँधता है।

[२] सारा जगत भगवान स्वरूप ही है। अब यह सब, [३] जो दुश्मन दिखाई देता है और मित्र दिखाई देता है, वह सब भ्राँति है। इसलिए [४] किसी भी जीव को किंचित्मात्र सुख और दु:ख पहुँचाया तो उससे हमें पुण्य और पाप का असर होता है और उन असरों को फिर हमें भुगतना है।

मतलब [५] पुण्य और पाप, उन दोनों का असर होता रहता है। पुण्य रहा तो पुण्य का असर किसे कहलाए? उससे हमारी इच्छानुसार होता रहे। [६] पुण्य का असर क्या? हमारी धारणा के अनुसार सब होता रहे और पाप का असर क्या? जो धारणा हो उससे उलटा ही होता रहे। ऐसे कभी उलटे पासे पड़े थे क्या? अब क्या उसमें पासे फेंकनेवाले की भूल है? [७] फेंकनेवाले की भूल नहीं है। पासे फेंकनेवाला वही था मगर जब पुण्य का असर था तब पासे सही पड़ते थे और पाप का असर आया तब सारे पासे उलटे पडें। [८] जब पुण्य का असर होता है तब लोग 'आइये, आइये चंदुभाई सेठ' कहें और पाप का असर होता है तब लोग उलटा बोलें। अब चंदुभाई वही के वही हैं, मगर उनके [९] पाप-पुण्य का असर लोगों पर पड़ता है।

आवन-जावन, लेन-देन के हिसाब से

[१] आप सबकुछ तैयार लेकर आए हैं। दुकान, ऑफिस, बीवी-बच्चे सारा सामान तैयार लेकर आए हैं। [२] यह बहीखातों का हिसाब है। [३] आत्मा को न तो पिता होता है और न ही पुत्र होता है। [४] बहीखातों के लेन-देन के हिसाब के खातिर इकट्ठा होते हैं सभी। अब आगे क्या करना है यह नहीं जानते हैं, इसलिए आज जोत-जोत किया करते हैं (संसार के कार्यों में ही उलझे हुए रहते हैं)। [५] अरे, यह तो जोता हुआ तैयार ही है उसमें बहुत ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। चित्त सहज रखना और अन्य सबकुछ करते रहना। [६] जन्म से मृत्यु तक का सारा अनिवार्य रूप से लेकर आए हैं। खुद को पसंद आने पर कहते हैं कि मेरी मरज़ी अनुसार है और पसंद नहीं आता इसलिए कहते हैं कि अनिवार्य है। किंतु वास्तव में तो सबकुछ अनिवार्य है। यह सब जानना होगा न? यों ही गप्प कब तक चलाते रहेंगे? कुछ सारांश तो निकालना होगा न? सारांश का बहीखाता साथ में रखना।

सारांश का बहीखाता

पूर्वजन्म का क्या-क्या साथ लेकर आए हैं? [१] चंदुभाई की ज़रूरत की सारी की सारी चीज़ें लेकर आए हैं, [२] मन की ज़रूरतों की सारी वस्तुएँ लेकर आए हैं, [३] चित्त की ज़रूरतों की सारी वस्तुएँ लेकर आए हैं। [४] बुद्धि की, अहंकार की सारी ही ज़रूरतों की वस्तुएँ लेकर आए हैं (इस तरह खुद अपने बुद्धि के आशय में ज़रूरतों की सारी वस्तुएँ लेकर आए हैं)। [५] अब ज़रूरतों की वे वस्तुएँ कुदरत आपको

सप्लाइ (प्रदान) करती है और खुद कहते हैं कि, 'मैं करता हूँ'। ६ सब तैयार हो उसमें हमने क्या किया कहलाए? जो तैयार नहीं है उसके लिए करना वह पुरुषार्थ कहलाए।

व्यवहार में, जोड़ना

१ यह तो सारी 'रिलेटिव' सगाई है। २ यदि 'रिअल' सगाई होती और हम ज़िद पर अड़ जातें कि, 'तू जब तक नहीं सुधरेगी तब तक मैं ज़िद नहीं छोडूँगा' तब कुछ काम आता। मगर यह तो 'रिलेटिव' है, इसलिए यदि घंटेभर के लिए पत्नी के साथ कहा-सुनी हो गई तो दोनों को तलाक़ का विचार आ जाए, और बात वहाँ तक पहुँच जाए। हमें यदि पत्नी की ज़रूरत है, तो ३ वह चाहे संबंध को तोड़ने की कितनी भी कोशिश करती रहे मगर हम बार-बार जोड़ते रहें। तभी यह 'रिलेटिव' संबंध टिके, वर्ना टूट जाए। पिता के साथ भी 'रिलेटिव' संबंध है। लोग तो 'रिअल' सगाई मानकर पिता के साथ ज़िद पर अड़ जाते हैं। ४ वह नहीं सुधरे तब तक क्या ज़िद पर अड़े रहना? अरे, ऐसे सुधारने जाएगा तो सुधारते सुधारते वह मर जाएगा, उसके बजाय उसकी सेवा कर।

'लट्टू', व्यवस्थित के अधीन

१ 'सब, सब की सँभालो,' हम सुधरें तो सामनेवाला सुधरेगा। यह तो विचारणा है, और थोड़ी देर के बार साथ बैठना है तो फिर क्लेश किसलिए? आप कल का भूल गए हों किंतु हमें तो सभी वस्तुएँ 'ज्ञान' में हाज़िर होती हैं। यद्यपि यह तो सद्विचारणा है इसलिए जिसे आत्मज्ञान नहीं हो उसे भी काम में आए। लोग अज्ञान से ऐसा मानते हैं कि ढील देने पर पत्नी सिर पर सवार हो जाएगी। मगर यदि हमसे कोई पूछे तो हम बताएँ कि, २ 'तू भी लट्टू है और वह भी लट्टू है फिर कैसे सवार हो सकती है? ३ सवार होना या नहीं होना क्या यह उसके नियंत्रण में है? ४ वह तो 'व्यवस्थित' के नियंत्रण में है। और वह कहाँ हम पर सवारी करनेवाली है? आप ज़रा ढील दें ताकि उस बेचारी के मन के अरमान पूरे हो जाएँ कि पति अब मेरे अंकुश में हैं, यानी उसे संतोष हो जाए।

निमित्त को काटना

यदि सास बहू को दु:ख पहुँचाती हो तो बहू अपने दोष नहीं देखती मगर सास को ही कोसती रहती है। मगर बहू यदि धर्मध्यान समझती तो वह क्या करती? १ 'मेरे कर्म के दोष हैं, इसलिए मुझे ऐसी सास मिली है। २ मेरी उस सखी को अच्छी सास क्यों मिली है?' क्या ऐसा नहीं सोचना चाहिए? हमारी सखी की सास भली होती है या नहीं होती? तब फिर ३ क्या हम नहीं समझ सकते कि हमारी ही कोई भूल होगी वर्ना ऐसी सास कहाँ से आ मिलती?

४ घर में सास लड़ती हो तो हमें समझना चाहिए कि मेरे हिस्से में यही सास क्यों आई, अन्य कोई क्यों नहीं आई? ५ मतलब उसके साथ हमारा कुछ हिसाब है, इसलिए यह हिसाब शांतभाव से पूरा कर लें।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि में अंतर है इसलिए ऐसा होता है?

दादाश्री : नहीं, दृष्टि में अंतर नहीं है, मगर ६ उसे भान ही नहीं है कि मेरे कर्मों के उदय का यह फल है, वह तो प्रत्यक्ष को ही देखती है, ७ निमित्त को ही काटने दौड़ती है। सास तो निमित्त है, उसे काटने मत दौड़ना। ८ निमित्त का तो हमें उपकार समझना चाहिए कि एक कर्म से हमें मुक्त किया उसने। एक कर्म में से मुक्त होना हो तो कैसे मुक्त हो सकते हैं? कोई हमारी जेब काट गया और जेब काटनेवाले को हम निर्दोष देखें, अगर तो सास गालियाँ देती हो या हम पर अँगारे बरसाए, तो उस समय सास हमें निर्दोष दिखाई दें तो समझना कि इस कर्म से हमारी मुक्ति हो गई, वर्ना कर्म से मुक्ति नहीं हुई है। एक ओर कर्म से मुक्ति नहीं हुई है और ऊपर से सास का दोष देखें, यानी फिर दूसरे नये कर्म की वृद्धि हुई। और कर्म की वृद्धि होने से फिर उलझ जाए।

दादावाणी

सहन नहीं करें, सोल्युशन लाएँ

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने टकराव टालने को कहा, इसका मतलब सहन करना होता है न?

दादाश्री : टकराव टालना मतलब सहन करना, ऐसा नहीं। सहन करेंगे तो कहाँ तक करेंगे? सहन करना मतलब स्प्रिंग दबाना, वे दोनों समान ही हैं। दबाया हुआ स्प्रिंग कितने दिन रहेगा? इसलिए सहन करना तो सीखना ही नहीं, सॉल्युशन (समाधान) लाने का सीखिये।

अज्ञान दशा में तो मनुष्य सहन ही करता है। फिर एक दिन दबाया हुआ स्प्रिंग जैसे उछलता है वैसे उछलकर सब गिरा दे (सारी भड़ास बाहर निकाल दे)। मगर वह तो कुदरत का नियम ही ऐसा है।

[१] ऐसा जगत का कानून ही नहीं है कि किसी के खातिर हमें सहन करना पड़े। [२] अन्य के निमित्त से जो कुछ सहन करना होता है, वह हमारा ही हिसाब होता है। मगर हमें पता नहीं चलता कि यह किस बहीखाते का है और कहाँ का माल है इसलिए हम ऐसा समझते हैं कि इसने (सामनेवाले ने) नया माल उधार देना शुरू किया। [३] नया कोई उधार देता ही नहीं है, हमारा उधार दिया हुआ माल ही लौटाने आते हैं। हमारे इस ज्ञान में सहन करना होता ही नहीं है। ज्ञान से समझ लेना कि, [४] 'सामनेवाला शुद्धात्मा है।' [५] यह जो कुछ आया वह मेरे ही कर्म के उदय से आया है, [६] सामनेवाला तो निमित्त है। फिर आपको यह ज्ञान इटसेल्फ (खुद) ही 'पज़ल' 'सॉल्व' (समस्या का समाधान) कर दे।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह हुआ कि मन में समाधान करना कि यह जो हमारा माल था वही वापस आया, ऐसा ही न?

दादाश्री : [७] वह खुद शुद्धात्मा है और यह उसकी प्रकृति है। [८] प्रकृति यह फल देती है। [९] हम शुद्धात्मा हैं, वह (सामनेवाला) भी शुद्धात्मा है। अब दोनों का तार कहाँ जुड़ा हुआ है? [१०] यह प्रकृति और वह प्रकृति, दोनों पारस्पारिक सारे हिसाब चुकाती है। उसमें एक प्रकृति के कर्म के उदय के कारण दूसरा उसे देता है, इसलिए हमने कहा कि, यह हमारे कर्म का उदय है और सामनेवाला निमित्त है, [११] वह दे गया मतलब हमारा हिसाब चुकता हो गया। [१२] ऐसा सॉल्युशन हो वहाँ फिर सहन करने को कुछ रहता ही नहीं न?

सहन करने से क्या होगा? ऐसा (ज्ञान से) स्पष्टीकरण नहीं करेंगे, तो एक दिन वह 'स्प्रिंग' उछलेगा। 'स्प्रिंग' को उछलते आपने देखा है? मेरा 'स्प्रिंग' बहुत उछलता था। मैं बहुत दिनों तक सहन करता रहूँ फिर एक दिन उछले तो सबकुछ उड़ा दूँ। यह सब अज्ञान दशा में था, यह मेरे ध्यान में है। इसलिए तो कहता हूँ कि सहन करना मत सीखना। अज्ञान दशा में ऐसा सहन करना होता है। हमारे यहाँ तो स्पष्टीकरण कर लेना कि, इसका परिणाम क्या? उसका कारण क्या? बहीखाते में पद्धतिनुसार देख लेना, [१३] कोई वस्तु बहीखाते के बाहर की होती नहीं है।

'न्याय स्वरूप', वहाँ उपाय तप

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, 'समभाव से निकाल (निपटारा)' करने की हमारी वृत्ति हो, फिर भी सामनेवाला मनुष्य हमें परेशान करे, अपमान करे तब हम क्या करें?

दादाश्री : कुछ नहीं। [१] ऐसा हमारा हिसाब है, तो हमें उसका 'समभाव से निकाल' करना है ऐसा तय रखना। [२] हम अपने कायदे में ही रहें और खुद अपना पज़ल सॉल्व करते रहें।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला मनुष्य हमारा अपमान करे और हमें अपमान लगे उसका कारण हमारा अहंकार है?

दादाश्री : [३] वास्तव में, सामनेवाला अपमान करता है वह हमारा अहंकार पिघला देता है। [४] जितना इक्सेस (अधिशेष) अहंकार होगा उतना पिघलेगा,

उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है? ये कर्म हमें छूटने नहीं देते। हम तो [५] सामने छोटा बालक हो तो भी कहें, अब छुटकारा दिला।

आपके साथ किसीने अन्याय किया और आपको ऐसा लगे कि मेरे साथ यह अन्याय क्यों किया, तो आपको कर्म बँधता है। क्योंकि [६] आपकी भूल की वजह से सामनेवाले को अन्याय करना पड़ता है। अब यहाँ मति कैसे पहुँचेगी? जगत तो शोर मचा देगा। [७] भगवान की भाषा में कोई न्याय भी नहीं करता और कोई अन्याय भी नहीं करता, 'करैक्ट' (सही) करता है। अब यहाँ तक लोगों की मति कैसे पहुँचेगी? यदि घर में मतभेद कम होते जाएँ, झँझट कम हो, इर्द-गिर्दवालों का प्रेम बढ़े तो समझना कि बात आपके समझ में आई है। वर्ना बात समझ में नहीं आई है।

[८] किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो, तो वह भगवान की भाषा में 'करैक्ट' है, [९] ज्ञान कहता है कि यदि तू न्याय खोजेगा तो तू मूर्ख है। इसलिए उसका उपाय है तप।

[१०] यह जगत न्याय स्वरूप है, गप्प नहीं है। एक मच्छर भी आपको यों ही छूए, ऐसा नहीं है। [११] मच्छर छूआ मतलब आपका कोई कारण है। बाकी [१२] यों ही एक स्पंदन भी आपको छूए ऐसा नहीं है। [१३] आप संपूर्ण स्वतंत्र हैं। [१४] किसी का अंतराय (अवरोध) आपको नहीं है।

ज्ञानी से 'एडजस्टमेन्ट' सीखिये

एक आदमी था, जो रात में दो बजे न जाने क्या-क्या करके घर लौटता था, क्या करता था इसका वर्णन करने जैसा नहीं है। आप समझ जाएँगे। इसलिए घरके लोगोंने मिलकर परामर्श किया कि इसका क्या उपाय करना? उससे लड़ना या घर में घुसने नहीं देना? फिर उसका अनुभव भी कर लिया। बड़े भैया लड़ने गए तो उस आदमीने उनसे कह दिया कि 'आपकी पिटाई किए बगैर नहीं छोड़ूँगा।' फिर सभी घरवाले मुझसे पूछने आए कि, 'इसका क्या करना? यह तो ऐसा बोलता है?' तब मैंने घरवालों से कहा कि, 'कोई उसे एक शब्द भी मत कहना, आप कुछ कहेंगे तो वह ज्यादा फ्रंट (आपके विरुद्ध) हो जाएगा, और घर में घुसने नहीं देंगे तो वह बगावत पर उतर आएगा। उसको जब आना हो तब आए और जब जाना चाहे तब जाए। [१] हमें राइट (सही) भी नहीं कहना है और रोंग (गलत) भी नही कहना है। [२] राग भी नहीं रखना है और द्वेष भी नहीं रखना है। [३] समता रखना, करुणा रखना।' ऐसा करने पर तीन-चार साल में वह बिलकुल अच्छा हो गया। आज वह धंधे में बहुत मदद करता है। [४] जगत निकम्मा नहीं है, मगर काम लेते आना चाहिए। [५] सभी भगवान ही हैं और [६] प्रत्येक अलग-अलग काम लेकर बैठे हैं, इसलिए नापसंदीदा नहीं रखना।

साइंस, समझने जैसा

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो फिर भी सामनेवाला आ कर झगड़ा करे तो हमें क्या करना? दो में से एक जागृत हो मगर सामनेवाला क्लेश करे तो वहाँ पर क्लेश होगा ही न?

दादाश्री : इस दीवार के साथ लड़े तो कितनी देर तक लड़ पाएगा? [१] इस दीवार से यदि हमारा सिर टकरा गया तो हम उसके साथ क्या करेंगे? सिर टकराया मतलब दीवार से हमारी अनबन हो गई इसलिए [२] क्या दीवार के साथ हम मार-पीट करेंगे? वैसे ही, यह जो [३] बहुत क्लेश करवाते हैं वे सभी दीवारें हैं। इसमें सामनेवाले को क्या देखना? [४] हम अपने आप समझ जाएँ कि यह दीवार के समान है। ऐसा समझ लेना, फिर है कोई मुसीबत?

प्रश्नकर्ता : हमारे मौन रहने पर सामनेवाले पर उलटा असर होता है, वह समझता है कि इनका ही दोष है और वह ज्यादा क्लेश करता है।

दादाश्री : [५] यह तो हमने मान लिया है कि

'मैं मौन रहा इसलिए ऐसा हुआ'। हम रात में जागे और बाथरूम की ओर जाते हुए दीवार से टकरा गए तो वहाँ क्या हमारे मौन रहने के कारण दीवार हमसे टकराई है?

[६] मौन रहिये या बोलिये, उससे कोई लेना-देना ही नहीं है। हमारे मौन रहने से सामनेवाले को असर होता है ऐसा कुछ नहीं है। [७] ऑन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स, केवल वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण हैं। किसीकी तनिक भी सत्ता नहीं है। [८] तनिक भी सत्ता बगैर का यह जगत, उसमें कोई क्या करनेवाला है? यदि इस दीवार की सत्ता हो तो उस व्यक्ति की सत्ता होती है। [९] इस दीवार से लड़ने की हमारी सत्ता है? [१०] वैसे सामनेवाले के साथ शोर मचाने के क्या माने हैं? जब कि उसके हाथ में सत्ता ही नहीं है। इसलिए आप दीवार जैसे हो जाइये न! आप पत्नी को झिड़काते रहें तो उसके अंदर बैठे हुए भगवान नोट करें (ध्यान में रखें) कि मुझे झिड़काते हैं। और [११] यदि पत्नी आपको झिड़काए तब आप दीवार जैसे हो जाएँ तो आपके भीतर बैठे हुए भगवान आपकी 'हैल्प' (मदद) करें।

दुःख खडे हैं, मान्यता से ही

[१] दुःख तो नाममात्र नहीं है, मगर मानकर बैठ जाते हैं [१] इसके ही दुःख हैं। ऊपर जाने के बाद (मरने के बाद) क्या किसी का कोई खत आया था कभी आप पर?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वहाँ से तो कैसे आएगा?

दादाश्री : ऐसा यह संसार है। आपके [२] बहीखाते में जिन के हिसाब जमा होंगे, वह हिसाब चुकता करने, इस जनम में वे लोग आपको मिलते हैं। और [३] पुराने हिसाब समाप्त होने पर वे आपसे अलग हो जाते हैं, [४] मर जाते हैं और यदि उनसे नया हिसाब शुरू नहीं हुआ हो तो फिर अगले जनम में वे आपको नहीं मिलेंगे।

[५] कप-रकाबी जैसा हमारा हिसाब है। [६] ऋणानुबंध है वहाँ [५] तक वे जीवित रहेंगे। [७] मगर हिसाब पूरा होने पर रकाबी टूट जाए। [८] जो टूट गया वह व्यवस्थित, उसे फिर याद करना नहीं होता। ये मनुष्य भी तो कप-रकाबियाँ ही है न? ऐसा दिखाई देता है कि मर गए, पर मरते नहीं है, फिर से यहाँ पर ही आते हैं। इसलिए तो यदि हम मृतकों के प्रतिक्रमण करें तो उनको पहुँचे। वे जहाँ हो वहाँ उन्हें पहुँचे।

स्मृति, राग-द्वेष के अधीन

[१] याद आती है वह राग-द्वेष के कारण है। जिस पर जिनका जितना राग, उतनी वह वस्तु ज्यादा याद आती रहती है। [२] बहू मायके जाए तब वह सास को भूलना चाहती है मगर नहीं भुला पाती, क्योंकि द्वेष है, नापसंद है। [३] जब कि, पति याद आता रहे, क्योंकि सुख दिया था इसलिए उसके प्रति राग है, इस कारण याद आए। बहुत दुःख दिया हो या बहुत सुख दिया हो, वही याद आए, क्योंकि राग-द्वेष के कारण वह चिपका हुआ होता है। उसे मिटाने पर विस्मृत हो जाए। जो विचार अपने आप आए, वह 'याद' आया कहलाए। ये सब धुल जाने पर स्मृति बंद हो जाए और उसके बाद मुक्त हास्य उत्पन्न होता है। स्मृति होने से तनाव रहता है। मन खिंचा हुआ रहता है इसलिए मुक्त हास्य उत्पन्न नहीं होता। [४] सबको अलग-अलग याद आता है। एक को आता है वह दूसरे को नहीं आता। क्योंकि सब का अलग-अलग ठिकानों पर राग-द्वेष होता है। स्मृति जो है, वह राग-द्वेष से है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, उस स्मृति को निकालनी तो पड़ेगी न?

दादाश्री : यह [५] स्मृति, इटसेल्फ कहती है कि हमें निकाल और सब धो डाल। यदि वह स्मृति नहीं आती तो भारी बखेड़ा खड़ा होता। वह यदि नहीं आए तो आप किसे धोएँगे? आपको खबर कैसे होगी कि कहाँ पर राग-द्वेष है? [६] स्मृति आती है वह तो अपने आप निपटारे हेतु आती है। राग-द्वेष को धो डलवाने

आती है। जो भी स्मृति आए उसे धो डालिए, साफ कर दीजिए, तो वह स्मृति धुलकर विस्मृत हो जाएगी। याद इसलिए ही आती है, कि यहाँ आपके राग-द्वेष हैं उसे मिटाइये, उसका पश्चाताप कीजिए। इतना करने से वह मिट जाए और सब विस्मृत हो जाए। जो ज्ञान हमें जगत विस्मृत करवाए, वह यथार्थ ज्ञान है।

उसमें किसकी भूल ?

प्रश्नकर्ता : मेरा स्वभाव ऐसा है कि कुछ गलत बर्दाश्त नहीं कर सकता इसलिए गुस्सा आ जाता है।

दादाश्री : [१] गलत है, यह न्याय कौन करेगा?

प्रश्नकर्ता : हमारी बुद्धि जितना काम करे, उसके अनुसार हम न्याय करें।

दादाश्री : हाँ, उतना न्याय होता है।

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसा है कि, यदि एक आदमी को हम रोज़ाना पच्चीस रुपये पगार देते हों और वह आदमी पाँच रुपये का भी काम नहीं करता हो, तब हमें ऐसा तो होगा ही कि यह ठीक नहीं है?

दादाश्री : मगर [२] वह काम क्यों नहीं करता होगा? किस कारण से वह काम नहीं करता होगा?

प्रश्नकर्ता : वह स्वभाव से प्रमादी है, इसलिए।

दादाश्री : [३] क्या ऐसे आदमी सभी लोगों को मिलते होंगे?

प्रश्नकर्ता : सभी को मिलते होंगे ऐसा कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : तो [४] आपको ही ऐसा आदमी क्यों आ मिला? उसका कोई कारण तो होगा न?

प्रश्नकर्ता : मेरे पिछले कर्म ऐसे होंगे इसलिए मुझसे आ मिला।

दादाश्री : [५] तो फिर उसका क्या दोष? [६] तो उसके ऊपर गुस्सा करने का कारण ही कहाँ रहा? [७] गुस्सा तो अपने आप पर करें कि, 'भैया, मैंने ऐसे कर्म बाँधे हैं कि मुझे तेरे जैसा आदमी मिल आया?' [८] खुद की कमज़ोरी तो खुद को ही नुकसानदेह होती है। [९] 'भुगते उसकी भूल'। [१०] वह काम नहीं करे और आप गुस्सा करें तो आपको दु:ख होगा इसलिए भूल आपकी है। वह तो वैसे का वैसा ही रहेगा। कल भी वैसा ही करेगा और ऊपर से आपकी नकल उतारेगा। आपके मुड़ते ही आपके पीछे आपका मज़ाक उड़ाएगा और कहेगा कि, 'घन-चक्कर ही है, जाने दीजिए उसे!'

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसे पास बिठाकर, समझाकर कहें कि, 'तुझसे इतना काम क्यों नहीं हो पाता? देख, दूसरे कितना अच्छा काम करते हैं?' उसे आता नहीं हो तो सिखलाएँ, क्या ऐसा करें?

दादाश्री : हाँ, उसकी समझ में आए, उसे भावना उत्पन्न हो, ऐसे समझाना चाहिए।

फरियादी ही गुनहगार

प्रश्नकर्ता : कुछ लोग ऐसे होते हैं कि हम कैसा भी अच्छा वर्तन करें, फिर भी वे समझते ही नहीं है।

दादाश्री : [१] वे नहीं समझते हों तो उसमें हमारी ही भूल है कि हमें ऐसे समझदार क्यों नहीं मिले! [२] इनका संयोग ही हमें क्यों आ मिला? [३] जब-जब हमें जो कुछ भुगतना पड़ता है वह भुगतना हमारी ही भूल का परिणाम है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या हम ऐसा समझ लें कि हमारे कर्म ही ऐसे हैं?

दादाश्री : अवश्य। हमारी भूल के बिना हमें भुगतना होता ही नहीं। [४] इस जगत में ऐसा कोई नहीं है कि जो हमें ज़रा-सा भी, किंचित्मात्र दु:ख दे और यदि कोई दु:ख देनेवाला है तो वह हमारी भूल ही है। [५] तत्त्व का दोष नहीं है, वह तो निमित्त है। इसलिए जो भुगते उसकी भूल।

फरियाद नहीं, निपटारा कीजिए न

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मेरी फरियाद कौन सुने?

दादाश्री : तू फरियाद करेगा तो तू फरियादी हो जाएगा। [१] मैं तो फरियाद लेकर आनेवाले को ही गुनहगार मानूँ। [२] तुझे फरियाद करने का अवसर ही क्यों आया? फरियादी बहुतेरे गुनहगार ही होते हैं। [३] खुद गुनहगार हो तो फरियाद करने आए। तू फरियाद करेगा तो तू फरियादी हो जाएगा और [४] सामनेवाला आरोपी होगा इसलिए उनकी दृष्टि में आरोपी तू ठहरेगा। इसलिए किसी के विरुद्ध फरियाद मत करना।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे क्या करना?

दादाश्री : [५] 'वे' (पति) बुरे दिखाई दे तो कहना कि, 'वे तो बड़े अच्छे मनुष्य हैं, मैं ही झूठी हूँ।' ऐसे गुणा किया हो तो भाग कर देना और भाग किया हो तो गुणा कर देना। यह गुणा-भाग क्यों सिखलाते हैं? संसार में निबटारा करने के लिए।

वह भाग किया करता हो तो हम गुणा करें ताकि रकम ही उड़ जाए। [६] सामनेवाले मनुष्य के लिए विचार करना कि उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा, वही गुनाह है। [७] रास्ते से गुज़रते समय पेड़ से टकराए तो उससे क्यों नहीं लड़ते? [८] पेड़ को जड़ कैसे कहा जाए? जो लगे, वे सारे हरे पेड़ ही हैं। [९] गाय का पैर हमारे पैर पर पड़ जाए तब हम कुछ कहते हैं? ऐसा ही इन सभी लोगों का है। [१०] 'ज्ञानीपुरुष' सभी को कैसे क्षमा करते हैं? वे समझें कि इन बेचारों को समझ नहीं है। ये सभी पेड़ समान हैं। समझदारीवालों को तो कुछ कहना ही नहीं पड़ता। वे तो तुरंत अंदर ही प्रतिक्रमण कर डालें।

[११] सामनेवाले का दोष नहीं देखें, वर्ना उससे तो संसार बिगड़ जाता है। [१२] खुद के ही दोष देखा करना। हमारे ही कर्मों के उदय का फल है यह। इसलिए कुछ कहने को रहा ही नहीं न?

कुदरती कानून : 'भुगते उसकी भूल'

[१] 'भगवान का कानून कहता है कि जिस क्षेत्र में, जिस काल में, जो भुगतता है वह खुद ही गुनहगार है। उसमें किसी से, वकील से भी पूछने की ज़रूरत नहीं है।' किसी की जेब कटे तब काटनेवाले की आनंद की परिणति होती है, वह तो जलेबी खाता हो, हॉटेल में चाय-पानी पीकर, मज़े उड़ा रहा हो और उस समय वह कि [२] जिनकी जेब कटी है, वह दु:ख भोग रहा होता है इसलिए भुगतनेवाले की भूल। [३] उसने भी कभी चोरी की होगी इसलिए आज पकड़ा गया, इसलिए वह चोर है। और वह (काटनेवाला) तो जब पकड़ा जाएगा तब चोर कहलाएगा।

हमने चंदुभाई को पैसे उधार दिए हों और वे छ: महीने तक पैसे नहीं लौटाए तब? अरे! दिए किसने? [४] तेरे अहंकार को उन्होंने पोषण दिया इसलिए दयालु होकर तूने पैसे दिए इसलिए अब चंदुभाई के खाते में जमा ले ले और अहंकार के नाम पर लिख दे।

[५] यु आर होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फोर योर सेल्फ (आप पूर्णरूप से अपने खुद के लिए जिम्मेदार हैं)। [६] जो दु:ख देता है वह तो केवल निमित्त है मगर मूलत: भूल खुद की ही है। [७] जो फायदा करता है वह भी निमित्त है और जो नुकसान करवाता है वह भी निमित्त है। मगर [८] ऐसा हमारा हिसाब है, इसलिए ऐसा होता है।

'ज्ञानीपुरुष' का एक ही शब्द समझ जाए और सही मानों में उसे पकड़ ले तो मोक्ष में ही पहुँच जाए। उससे फिर किसीको किसीकी सलाह ही नहीं लेनी पड़े कि, [९] 'इसमें भूल किसकी?' 'भुगते उसकी भूल।'

उसमें निमित्त का क्या दोष?

'भुगते उसकी भूल' इतना अगर पूर्णरूप से समझ में आ जाए तो भी वह मोक्ष में ले जाए। [१] यह जो लोगों की भूल देखते हैं वह तो बिलकुल गलत है। [२] अपनी भूल को लेकर निमित्त आ मिलता है। लोग तो, [३] यदि जीवित निमित्त मिले तो उसे काटने दौड़े, और यदि काँटा लगे तो क्या करे? रास्ते पर काँटा पड़ा हो और हज़ार मनुष्य निकल जाए मगर

किसीको नहीं छूए, मगर चंदुभाई के जाते ही काँटा टेढ़ा हो तो भी उनके पैर में घुस जाए। ४'व्यवस्थित' तो कैसा है? काँटा जिसे लगनेवाला हो उसे ही लगे। ५सारे के सारे संयोग इकट्ठा कर दें, मगर उसमें निमित्त का क्या दोष?

६यदि सास बहू को डाँटें और फिर भी बहू को बुरा नहीं लगता हो और सास ही परेशान रहा करती हो तब भूल सास की ही न? ७यदि जेठानी के साथ छेड़खानी की और हमें भुगतना पड़ा तो वह हमारी भूल है, और ८छेड़खानी नहीं करने पर भी वह हमें बुरा-भला सुनाए, तो पिछले जनम का कुछ हिसाब शेष होगा उसे चुकता करने के लिए वह ऐसा सुनाती है। तब आप, फिर से उसे दोषी मानने की भूल मत करना, वर्ना फिर से भुगतना पड़ेगा। मतलब, यदि छूटना चाहें तो वह कड़वा-मीठा जो भी कुछ दे (गालियाँ आदि) उसे जमा कर लेना। हिसाब चुकता हो जाएगा। ९इस जगत में बिना हिसाब के तो किसी से आँख तक नहीं मिलती, तो फिर क्या अन्य सब कुछ बिना हिसाब के होता होगा? १०आपने जितना-जितना, जिसे-जिसे दिया होगा उतना वे आपको वापस करेंगे। तब आप जमा ले लेना खुश होकर कि, 'अच्छा है! अब बहीखाता पूरा होगा।' वर्ना भूल करेंगे तो फिर से भुगतना होगा ही।

...जब कोई जूते चुराकर ले गया तब

मुझे भी इसका अनुभव हुआ था। मेरे भी जूते कोई उठा ले गया था। १उसमें वह ले जानेवाले का क्या दोष? २उसे कोई अड़चन होगी इसलिए वह उठा ले गया होगा, ३बिना अड़चन के तो लेता ही नहीं न? जूते गए, मतलब हम जानें कि किसी पुण्यशाली के हाथों लगे होंगे। क्योंकि ४उसकी पुण्याई होने पर ही ऐसे महँगे जूते हाथ लगे न! ५वर्ना ऐसा नया जूता उसके हिस्से में कैसे आता? ६मगर जूते गए इसलिए हमें समझ लेना चाहिए कि हमारा हिसाब चुकता हो ही गया।

७यह जूते जाने का नियम ऐसा है कि आपके सात जूते जानेवाले होंगे तो सात के जाने के बाद आठवाँ नहीं जाएगा। फिर चाहें आप ८प्रतिदिन नये जूते पहनकर जाएँ। अगर आपमें हिम्मत है तो जितने जूते जाएँ उतने जाने दीजिए। क्योंकि साथ-साथ नियम भी कहा गया है, इसलिए फिर ९चाहे कैसा भी चोर आए, फिर भी वह नहीं उठाएगा। यह नियम जान लिया हो तो अच्छा रहे न? १०ज़्यादा से ज़्यादा सात जाएँगे या दस जाएँगे या फिर बारह जाएँगे, ११मगर उसका कोई अंत तो होगा या नहीं होगा? १२इसलिए उसका अंत आ जाने दीजिए, क्योंकि यह सब अंतवाला है।

दुतकार कितनी जोखिमी?

१वीतराग मार्ग में तो किसीका भी विरोध या फिर दुतकार नहीं होती। चोर, डाकू, बदमाश किसी के भी विराधक वीतराग नहीं होते। 'तू गलत धंधा लेकर बैठा है' उनको ऐसा कहने पर उनकी दुतकार होगी। और २जिसे दुतकारा जाए उनमें फिर भगवान नहीं देख सकते। भगवान तो इतना ही कहते हैं कि ३उनको भी तू तत्त्वदृष्टि से देख। ४अवस्था दृष्टि से देखने पर तेरा ही नुकसान है। ५हम क़ीचड़ में ढेला फेंकें तो उसमें क़ीचड़ का क्या बिगड़नेवाला है? क़ीचड़ तो बिगड़ा हुआ ही है, छींटें हम पर ही उडेंगी। यानी वीतराग तो बड़े सयाने थे, किसी भी जीव को बिना दुतकारे निकल जाते थे।

हमें पिछले अवतारों का भीतर में दिखाई देता है तब आश्चर्य होता है कि, ६अरे! दुतकार का इतना बड़ा नुकसान है? इसलिए, मज़दूरों को भी दुतकार नहीं लगे ऐसे बरतते हैं। क्योंकि वह फिर साँप होकर भी काटें। ७दुतकार बदला लिए बगैर छोड़ती नहीं है।

दुतकार का उपाय क्या?

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्या उपाय करना कि जिससे दुतकार के परिणाम भुगतने की बारी नहीं आए?

दादाश्री : उसके लिए दूसरा कोई उपाय नहीं

है, [१] सिर्फ प्रतिक्रमण करते रहना। जब तक सामनेवाले के मन का परिवर्तन नहीं हो जाए तब तक करते रहना। और प्रत्यक्ष मुलाकात होने पर मीठे बोल बोलकर क्षमा माँगना कि, 'भैया, मुझसे तो बड़ी भूल हो गई, मैं ठहरा मूरख और कमअक्ल, मुझे क्षमा करना।' ताकि सामनेवाले के घाव भरते जाएँ। [२] हम अपने आप को भला-बुरा कहें इससे उसे अच्छा लगे, तब उसके घाव भरें।

संसार में सुखी होने की इच्छा हो तो किसी को दुतकारना नहीं। [३] किसे दुतकारते हैं? भगवान को ही, क्योंकि [४] हरएक के भीतर भगवान बैठे हैं। [५] गाली मनुष्य को नहीं पहुँचती, भगवान को पहुँचती है। संसार के सारे परिणाम भगवान स्वीकारते हैं, इसलिए वे परिणाम ऐसे लाना कि जब भगवान स्वीकार करें तब हमारा बुरा दिखाई नहीं दे, [६] एक भी जीव को दुतकार कर कोई मोक्ष में जा नहीं सकता।

व्यवहार में 'न्याय' कौन-सा?

[१] व्यवहार ही हर जगह उलझन में डालता है न? व्यवहार और न्याय का कोई सरोकार नहीं है। लोग न्याय करने जाते हैं। न्याय को बीच में लाना ही नहीं चाहिए। जो सास बहू को परेशान किया करती हो वह भी व्यवहार और जो सास बहू को खिलाती-पिलाती हो वह भी व्यवहार है। और व्यवहार में न्याय खोजने जाएँ तब तो निबटारा ही नहीं होनेवाला न!

भगवान महावीर के साथ ग्यारह शिष्यों का व्यवहार था, उसमें किसी शिष्य को कभी बुरा लग जाए और उस शिष्य को सारी रात नींद नहीं आए, उसमें भगवान क्या करें? उसमें कहीं न्याय देखा जाता है क्या? [२] यदि व्यवहार को व्यवहार समझा तो न्याय समझ गया। पड़ोसी उलटा क्यों बोल गए? [३] क्योंकि हमारा व्यवहार ऐसा था इसलिए। और [४] हमारी वाणी उलटी निकले तो वह सामनेवाले के व्यवहार के अधीन है। मगर हमें मोक्ष पाना है इसलिए उसका प्रतिक्रमण कर लेना।

जगत, न्याय स्वरूप

व्यवहार, व्यवहार स्वरूप है, यह मैं आपको समझाता हूँ। [१] आपके यहाँ शादी हो और अपने सगे भाई के साथ आपने व्यवहार नहीं किया हो, [२] शादी की मिठाई नहीं भेजी हो। फिर जब आपके भाई के यहाँ शादी का अवसर आए तब क्या आप वहाँ से मिठाई आने की आशा रखेंगे? नहीं रखेंगे, क्योंकि [३] भाई के साथ ऐसा ही व्यवहार था। और यदि एक भाई के यहाँ से शादी के अवसर पर आपको सोलह लड्डू आए हों और दूसरे भाई के यहाँ से तीन लड्डू आए हों तो आपके अनुमान में क्या होना चाहिए कि, 'भले ही आज मेरे ध्यान में नहीं है मगर [४] मैंने तीन ही लड्डू भेजे होंगे। मेरा व्यवहार ही ऐसा होगा, इसलिए सामने से तीन लड्डू आए हैं।'

हरएक के साथ हमारा व्यवहार होता है। इसलिए [५] हमें समझ लेना चाहिए कि इसके साथ सीधा व्यवहार लाए हैं, इसके साथ ऐसा टेढ़ा व्यवहार लाए हैं। [६] यदि बेटी होकर तेरे साथ जबान लडायी, वही तेरा व्यवहार, उसमें तू न्याय कहाँ खोजेगा? और [७] दूसरी बेटी, हमारे नहीं थकने पर भी हमारे पैर दबाती रहे वह भी तेरा व्यवहार है। उसमें भी न्याय मत देखना।

[८] किसी मनुष्य ने गाली दी तो वह क्या है? उसने तेरे साथ का व्यवहार पूरा किया। सामनेवाला जो भी कुछ करता है, नमस्कार करता हो, गालियाँ देता हो, [९] वह सारा ही तेरे साथ का व्यवहार ऑपन (खुला) करता है। वहाँ पर, व्यवहार का व्यवहार से भाग करना और व्यवहार को स्वीकार करना। वहाँ तू बीच में न्याय मत खोजना। न्याय खोजने पर उलझ जाएगा। व्यवहार में न्याय देखना नहीं होता। व्यवहार, व्यवहार स्वरूप ही है।

न्याय करनेवाला यदि चेतन होता तब तो वह पक्षपात भी करता मगर इस जगत का न्याय करनेवाला निश्चेतन-चेतन है और 'वीतराग' है! मगर जगत के न्याय में भूल नहीं होती है।

प्रश्नकर्ता : और यदि हमने कभी गाली दी ही नहीं हो तो?

दादाश्री : [१०] यदि गाली नहीं दी होती तो सामने से गाली नहीं मिलती। [११] मगर यह तो अगला-पिछला हिसाब है इसलिए सामनेवाला दिए बगैर रहेगा ही नहीं न? [१२] बहीखाते में जमा हो तो ही आए। [१३] किसी भी प्रकार से इफेक्ट (परिणाम) आया वह बगैर हिसाब के नहीं आता। [१४] इफेक्ट वह कॉज़िज़ (कारण) का फल है। इफेक्ट का हिसाब, वह व्यवहार।

कड़वा पीए वह नीलकंठ

प्रश्नकर्ता : दादाजी, कोई कड़वे शब्द कहें तो वे मुझसे सहन नहीं होते, तो मुझे क्या करना?

दादाश्री : [१] कड़वे का स्पर्श होना वह खुद के हिसाब में होता है [२] और कड़वे का स्पर्श होता है तो समझना कि हमारे कड़वे की रकम (कर्मफल) में से एक कम हुई। [३] जितना कड़वा सहन करेंगे उतने आपके कड़वे (कर्म) कम होंगे। [४] जब मीठा भी आता है तो तब उतना (कर्म) कम होता है। मगर यह कड़वा स्पर्श करता है तब अच्छा नहीं लगता। यह (कर्म) कम होता है फिर भी कड़वा अच्छा क्यों नहीं लगता? सामनेवाले से यदि [५] हम कहें कि फिर से कड़वा दीजिए, फिर भी वह नहीं देगा। [६] क्योंकि सत्ता ही नहीं है किसी के हाथों में। [७] सबकुछ योजनाबद्ध है, कोई गप्प नहीं है। [८] मरते दम तक सबकुछ योजनाबद्ध है। यह सब तो हिसाब अनुसार होता है कि इनकी ओर से ३०१ आएँगे, उसके पास से २५ आएँगे, इसके पास से १० आएँगे। यदि 'ज्ञान' हाज़िर रहता हो तो कुछ भी सहन नहीं करना पड़ता। [९] यह तो सारा रिलेटिव रिलेशन (सापेक्ष संबंध) है। [१०] कड़वा-मीठा सब हिसाब से मिलता है। रोज़ाना कड़वा देनेवाला एक दिन ऐसा सुंदर दे जाता है! [११] ये सभी ऋणानुबंधी, ग्राहक-व्यापारी जैसे संबंध हैं।

हमें भी कड़वे पियाले (कर्मफल) आए थे। हमने पी लिए और पूरे भी हो गए। जिस किसीने [१२] कड़वा दिया, वह हमने उन्हें आशीर्वाद देकर पी लिया।

प्रश्नकर्ता : इसे ही कर्म खपाना कहते हैं न?

दादाश्री : हाँ वही, कि कड़वे उपहार आएँ उन्हें स्वीकार कर लेना। मगर लोग तो कड़वी भेंट-सौगात आएँ तब कहे कि, 'अरे, तू क्यों मेरे साथ ऐसा करता है?' फिर ऐसा करने से कर्म नहीं खपते, नया व्यापार शुरूहो जाए। जिसे स्वरूप का ज्ञान है मतलब कि जिसे यह दुकान निकाल देनी है वह निबटारा कर डाले। जिसे स्वरूप का ज्ञान नहीं है, उसका व्यापार तो चालू ही है। दुकान चालू है।

सामनेवाला कड़वा दे तब, वह किस खाते का है यह नहीं जानते तब तक वह पसंद नहीं आता। मगर पता चले कि, 'अरे! यह तो इस खाते का है', फिर वह पसंद आए। ''दादा' की रकम खतम (समाप्त) हो गई है इसलिए अब कड़वा कौन दे?' [१३] यह तो रकम जब तक बची हुई हो तब तक ही सामनेवाला देने आए।

हँसते मुख ज़हर पीये

सामनेवाला यदि कड़वा पिलाए और [१] आप आशीर्वाद देकर हँसते हुए पी जाएँ तो एक ओर आपका अहंकार धुल जाए और आप [२] उतने मुक्त हो जाएँ और दूसरी ओर, [३] कड़वा पिलानेवाले में भी परिणाम आता है और वह बदल जाता है। [४] वह समझ जाए कि मैं कड़वा पिलाता हूँ यह मेरी कमज़ोरी है और [५] यह हँसते मुख पी जाता है वह बड़ा शक्तिमान है।

हमें यदि खुद ही कड़वा पीने को कहा जाए तो क्या हम पीएँगे? यह जो [६] सामने से आकर कड़वा पिलाए वह तो कितना बड़ा उपकारी कहलाए? [७] परोसनेवाली तो माँ कहलाए। और [८] हमने जो दिया हो उसे वापस लिए बगैर तो गुज़ारा ही नहीं है, [९] नीलकंठ होने के लिए कड़वा पीना पड़ेगा।

[१०] 'हम' तो 'चंदुभाई' से कह दें कि तुझे सौ बार कड़वा पीना पड़ेगा। बस, फिर उसकी आदत बन

जाए। बालक को कड़वी दवा जबरदस्ती पिलानी पड़े। मगर यदि वह समझ जाए कि यह दवा हितकारी है तो फिर जबरदस्ती पिलानी नहीं पड़ती, अपने आप ही पी लेता है। एकबार तय किया कि जो भी कोई पिलाए वह कड़वा पी ही लेना है इसलिए फिर पी सकते हैं। मीठा तो पी सकते हैं मगर कड़वा भी पीना आना चाहिए। जब कभी पर पीना तो पड़ेगा ही न? [११] यह तो एक प्रकार का फिर मुनाफ़ा है, तो फिर कड़वा पीने की प्रेक्टिस (आदत) कर लेनी चाहिए न?

यदि सब के सामने कोई हमारा मानभंग करे तो नुकसान लगे मगर उसमें तो भारी मुनाफ़ा है। यह समझ में आने के बाद नुकसान नहीं लगता न?

'शुद्धात्मा' बोलते हैं तो फिर उस पद में रहना है न? उसके लिए तो अहंकार धुलवाना पड़ेगा। अब, [१२] हमें जो धोना था वह दूसरे किसीने धो दिया वही हमारा मुनाफ़ा, हमें तो मुनाफ़ा कहाँ हुआ यही देखना है।

महाजनी के धंधे में सुख की महाजनी

प्रश्नकर्ता : मेरे घर में हर तरह की मुश्किलें ही क्यों रहा करती हैं? धंधे में, वाइफ को, घर में सभी को कोई न कोई तकलीफ़ रहा ही करती है।

दादाश्री : [१] हम, लोगों को तकलीफ़ें दें, इसलिए फिर हमारे यहाँ तकलीफ़ें रहा करें। [२] हम, लोगों को सुख पहुँचाएँ, तो हमारे यहाँ सुख रहा करे। यदि सुख चाहिए तो लोगों को सुख पहुँचाइये और तकलीफ़ें चाहिए तो तकलीफ़ दिया करें, आपको जो चाहिए वह दूसरों को दीजिए। [३] हमारे यहाँ जो कुछ आता है उस पर से समझ लेना कि हमने दूसरों को क्या दिया था। यानी, सुख चाहिए तो सुख देने का प्रयत्न कीजिए, शुरूआत कीजिए।

यह जगत तो व्यवहार स्वरूप है, जो कहता है, 'देकर लीजिए', [४] तकलीफ़ें आती हैं तो हमें समझना चाहिए कि हमने लोगों को तकलीफ़ें ही दी हैं, दूसरा धंधा ही नहीं लगाया। और सुख मिलता है तो समझना कि हमने दूसरों को सुख दिया है।

प्रश्नकर्ता : पहले जो तकलीफ़ें दी गई होती हैं वे तकलीफ़ें आज आती हैं। अब जब ये तकलीफें हैं तब दूसरों को सुख कैसे दे सकें?

दादाश्री : अब तो [५] सुख देने का भाव कीजिए और फिर से किसीको तकलीफ़ मत देना। कोई दो गालियाँ दे जाए तब आप दूसरी पाँच गालियाँ मत परोसना और दो गालियाँ जमा कर लेना। आपने जो दो गालियाँ दी थी वे वापस आई हैं। इसलिए दो गालियाँ जमा कर लीजिए। लोग तो, कोई दो गालियाँ दे तब उसे जमा करने के बजाय दूसरी पाँच उधार देते हैं। अरे! उसके साथ व्यापार चालू क्यों रखते हैं? यानी [६] यह सारा महाजनी का हिसाब है। फिर जगत चाहे उसे कोई भी नाम दे, या ऋणानुबंध कहे, मगर सारा महाजनी का हिसाब है। मतलब, यदि पसंद है तो उधार दीजिए मगर वह उधारी वापस आएगी। [७] यह तो जमा-उधार का खेल है। [८] उधार दिया था वही वापस आता है। [९] इसमें भगवान हाथ डालते ही नहीं है। [१०] तकलीफ़ पसंद नहीं है तो फिर तकलीफ़ें उधार देना बंद कर दीजिए।

अंतराय, हमारे दखल के ही परिणाम

प्रश्नकर्ता : जो कार्य करते हैं उसमें विरोधी शक्ति आकर कार्य में रुकावट करती है, ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : [१] जो हमें सच्चा कार्य करने में रुकावट करता है, उसे अंतराय कर्म कहते हैं। मैं आपको समझाता हूँ, मानों कि मैं बगीचे में काम करते-करते एक दिन ऊब जाऊँ, और [२] मैं बोल दूँ कि, 'इस बगीचे में तो कभी आने जैसा ही नहीं है।' और फिर जब मुझे बगीचे में जाने की इच्छा हो, तब बगीचे में जाने को नहीं मिले। ये [३] जितने भी अंतराय हैं वे सब हमारे ही खड़े किए हुए हैं, उसमें बीच में किसीका दखल नहीं है। [४] किसी जीव में, किसी भी जीव का दखल

है ही नहीं, [५] खुद की दखल के कारण ही यह सब खड़ा हुआ है।

अन्य को रोकने से पड़े अंतराय

राजा किसी पर खुश हो जाए तब दीवान से कहे कि [१] 'इसे एक हजार रुपये दे देना।' तब वह दीवान सौ ही देता है। [२] कहीं पर तो दीवान राजा को समझा दें कि, 'इस आदमी में कुछ नहीं है, यह देने योग्य नहीं है।' [३] जो देने को तैयार हुआ हो उसे इस प्रकार रोके। अब इसका फल अगले अवतार में क्या आता है? [४] दीवान को, कभी भी पैसे नहीं मिल पाते। लाभांतराय होता है। ऐसे, आप [५] जहाँ-जहाँ रुकावट करेंगे, किसीके सुख में रुकावट करें, जिनमें आप रुकावट डालें उनका आपको अंतराय होता है, और फिर आप कहें, 'मुझे अंतराय कर्म बाधारूप है।' [६] कोई सत्संग में आने को तैयार हो और आप मना करें तो आपको अंतराय होता है। मतलब जिसमें आप रुकावट डालेंगे उसका फल आपको भुगतना पड़ेगा। कुछ दीवान तो ऐसे ज़रूरत से ज्यादा सयाने होते हैं कि राजा को किसीको बख्शिश देने नहीं देते, राजा को क्या ऐसी सलाह देते हैं? तब फिर क्या होगा? [७] उसने अंतराय डाला इसलिए उसको अंतराय खड़े होते हैं। फिर उसे किसी भी जगह कोई लाभ ही नहीं होता। कई लोग तो, जब कोई किसी गरीब को कुछ देता हो तो उसके देने से पहले अंतराय करे। अरे, उसमें दखल क्यों देते हो?

आपके यहाँ ज्ञातिभोज में सभी भोजन करने बैठे हों, उनमें से एक आदमी कहे कि, 'इन चार-पाँच लोगों को भोजन के लिए बिठा दीजिए,' और [८] आप मना करें तो वह आप भोजन में अंतराय डालते हैं। फिर आप कभी किसी जगह ऐसी ही मुश्किल में आ जाएँ। दूसरों में दखल दिया इसलिए झँझट हुई न? इसलिए हमें इतना समझ लेना चाहिए कि यह अंतराय कर्म क्यों आते हैं? यदि जानते हों तो फिर से ऐसा नहीं करेंगे न? [९] यह सब आपका ही अंतराय किया हुआ है जो आपने अपनी जिम्मेदारी पर किया है। खुद की जिम्मेदारी पर ही करना है इसलिए सोच-समझकर करना।

घर में छोटा बच्चा किसीको कुछ देता हो और आप मना कर दें कि, 'नहीं देना है।' तो उस बच्चे को कोई अंतराय कर्म नहीं होगा, किंतु आपका अंतराय कर्म पड़ा।

[१०] अंतराय कर्म बाधारूप होते हैं। वर्ना जहाँ आत्मा प्राप्त हुआ हो वहाँ हर चीज़ हाज़िर होती है, [११] विचार आते ही, वह चीज़ हाज़िर ही होती है, लेकिन यह तो हर जगह पर अंतराय किए हुए हैं उसीको लेकर हर तरफ रुकावट होती है। जहाँ आत्मा है, वहाँ उसकी इच्छानुसार सब तैयार ही होता है। आत्मा तो भगवान है।

कितनी बड़ी भूल! यह कैसे समझ में आए?

कितने सारे अंतराय डाले हैं जीव ने! [१] ज्ञानीपुरुष, उसके हाथों में मोक्ष देते हैं, चिंतारहित स्थिति बनाते हैं, फिर भी कितने सारे अंतराय हैं कि उसे (जीव को) वस्तु की प्राप्ति ही नहीं होती है।

भगवान तो वह रहे, आपके भीतर मैं देखता हूँ, मगर आपको दिखाई नहीं देते। भगवान कहाँ दूर गए हैं? मगर ऐसा है, कि बीच में अंतराय पडे हैं, इसलिए खुद को कैसे दिखाई दें अब? [२] वे अंतराय खुद ने ही डाले हैं। कहते हैं कि, 'मैं चंदुलाल हूँ।' तब भगवान क्या कहते हैं कि, 'अच्छा फिर, आप जितना बोले उतने अंतराय पड़े।' अब वे अंतराय हमें ही तोड़ने होंगे। मगर वे खुद से टूटनेवाले नहीं हैं, वह तो 'ज्ञानीपुरुष' से भेंट हो जाए और वे तोड़ दें तब टूटें।

अड़चनें कराए प्रगति

'अड़चन का आना अच्छी वस्तु है', ऐसा मानने पर ही आगे बढ़ पाएँगे। [१] जिसे आप अड़चन कहते हैं, वह अच्छी वस्तु है ऐसा मानेंगे, तब आगे बढ़

पाएँगे। वर्ना, [२] 'वह खराब है' ऐसा कहेंगे तो वह अड़चन आपको रुकावट कर देगी और आपकी प्रगति कुंठित हो जाएगी। [३] अड़चनों को पार करेंगे तो ही कार्य संपन्न होगा। वर्ना अड़चने ही आपको रोकेंगी और अड़चनों के साथ आप बैर बाँधेंगे तो कोई फायदा नहीं होनेवाला।

प्रश्नकर्ता : बैर बाँधना मतलब?

दादाश्री : [४] जो लोग अड़चनें पैदा करते हैं उनके प्रति, 'सामनेवाला ऐसा क्यों है?' ऐसा मन में हो, अगर तो यदि ऐसे कोई और रास्ता निकालने जाएँगे तो भी उसमें कोई लाभ नहीं होनेवाला। [५] लोग अड़चनें तो करेंगे ही। हमें ऐसा मानकर ही आगे बढ़ना है, ऐसा मानकर ही चलना है [६] और फिर लोगों के साथ वीतराग रहना है, इतना मानकर ही मोक्षमार्ग पर अग्रसर होना है। फिर भी, हमने जो मोक्षमार्ग दिया है वह बहुत आसान मार्ग है।

हिसाब मिला और चिंता टली

हमारे धंधे में एकबार ऐसा हुआ कि एक साहब ने अचानक ही हमारा दस हजार रुपये का नुकसान कर दिया। हमारा एक काम, साहब ने अचानक ही अस्वीकृत कर दिया। उन दिनों दस हजार रुपयों की तो बड़ी क़ीमत थी। आज तो दस हजार की कोई क़ीमत नहीं रही न? मुझे उस दिन भीतर असर हुआ था, चिंता होने लगे वहाँ तक असर हुआ था। फिर मुझे तुरंत उसके सामने [१] अंदर से जवाब मिला कि, 'इस धंधे में मेरी अपनी पार्टनरशिप (भागीदारी) कितनी?' उन दिनों हम दो पार्टनर थे। मगर फिर [२] मैंने हिसाब लगाया कि दो पार्टनर तो कागज़ पर है, लेकिन वास्तव में कितने हैं? [३] वास्तव में तो बेटे, बेटियाँ, पार्टनर की पत्नी और मेरी पत्नी, सभी के सभी पार्टनर ही हैं न? [४] तब मुझे विचार आया कि इन सभी में से कोई चिंता नहीं करता है तो मैं अकेला ही क्यों अपने सिर पर लेकर बैठा हूँ? [५] उस दिन इस विचार ने मुझे बचाया था। बात तो सही है न? आपको मेरी बात कैसी लगती है? मेरा विचार बराबर है न?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने से पहले की बात है यह?

दादाश्री : हाँ, ज्ञान होने से पहले की बात है।

नफ़ा-नुकसान में सत्ता कितनी?

एक धंधे की दो संतान, एक का नाम घाटा और दूसरे का नाम मुनाफ़ा। घाटेवाली संतान किसीको अच्छी नहीं लगती, मगर दो ही होती हैं, वे दो तो जन्मे ही होते हैं। [१] धंधे में घाटा होता हो तो वह रात में होता है या दिन में होता है?

प्रश्नकर्ता : रात में भी होता है और दिन में भी होता है।

दादाश्री : मगर घाटा होता हो तो वह तो दिन में ही होना चाहिए न? रात में भी घाटा होता हो, तो रात में तो हम जागते नहीं हैं फिर रात में घाटा कैसे होगा? यानी [२] घाटे के और मुनाफ़े के कर्त्ता हम नहीं हैं। वर्ना रात में घाटा कैसे होता? और रात में मुनाफ़ा कैसे मिलेगा? [३] क्या ऐसा नहीं होता कि मेहनत करने पर भी घाटा हो?

प्रश्नकर्ता : हाँजी, ऐसा होता है।

दादाश्री : तो फिर मेहनत करने से मुनाफ़ा होता है या मेहनत करने से घाटा होता है? इसका डिसिझन क्या लेंगे?

प्रश्नकर्ता : घाटा या मुनाफ़ा वह किसीके हाथ की बात नहीं है, वह तो 'व्यवस्थित' के हाथ में होता है।

दादाश्री : हाँ, [४] सब 'व्यवस्थित' के अधीन हैं। इसलिए 'व्यवस्थित' अंदर से प्रेरणा करे और हम वैसे करें। उसमें हमारा दूसरा सयानापन इस्तेमाल नहीं करना। [५] बुद्धि से नापने जाएँ कि मुनाफ़ा होगा या घाटा तो क्या उसकी नाप मिलेगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं मिलती।

दादाश्री : एक मनुष्य को यदि कोई दर्द हुआ हो और वह दर्द को बुद्धि से नापने जाएँ, तो क्या होगा? उसे ऐसा ही हो जाए कि मैं मर जाऊँगा, और यदि दर्द नहीं हुआ हो, और बुद्धि से नहीं नापे तब भी क्या वह नहीं मरता? अरे, यों ही शूल उठे और मर जाए। ऐसा होता है या नहीं?

मतलब, यह सब घाटा या मुनाफ़ा, यह कुछ देखने जैसा नहीं है। अब देखना क्या है? [६] यह मुनाफ़ा और घाटा वह सबकुछ करके ही आए हैं, अब इसमें भाव डालिए (सत्संग में भाव रखिए)। [७] मुनाफ़ा या घाटा वह तो केवल नैमित्तिक रूप से अंदर की प्रेरणा अनुसार सब चलता रहेगा। [८] 'व्यवस्थित' को लाँघना नहीं। अंदर से जो प्रेरणा होती हो वैसे करना। घाटे के लिए भी 'व्यवस्थित' प्रेरणा करता है और मुनाफ़े के लिए भी 'व्यवस्थित' प्रेरणा करता है। मतलब, 'व्यवस्थित' की प्रेरणा अनुसार ही चलना। [९] 'जब नफ़ा-नुकसान सब व्यवस्थित' के अधीन हैं, तो फिर अब हमें करना क्या है? फुरसत का समय अन्यत्र मत बिगाडना, इस सत्संग में ही टाइम लगाना। क्योंकि [१०] अन्य सबकुछ आपके हाथ की सत्ता में है ही नहीं। ये व्यापारी लोग रात में कमाते होंगे या नहीं कमाते होंगे? रात को सो जाएँ तब भी कमाते हैं?

प्रश्नकर्ता : कमाई और घाटा तो चालू ही रहते हैं न?

दादाश्री : चालू ही रहते हैं। आप अपने शहर से यहाँ आए हैं तब भी वहाँ कमाई चालू ही रहेगी। यह ताज्जूब की बात है न? [११] दिन में भोजन करने बैठे हों तब भी कमाई चालू रहती है और घाटेवाले का घाटा भी चालू रहता है न! इन सभी बहीखातों का तारतम्य निकालना आता है मगर इस जगत का तारतम्य (सार) निकाले तो क्या निकले? हमें जगत का तारतम्य निकालना आया था। यह ज्ञान होने से पहले हमने तारतम्य निकाला था कि इस जगत का लेखा-जोखा क्या है? मतलब हम क्यों माथापच्ची करें? [१२] जिसके लिए मेहनत करते हैं वह तो सारा बना-बनाया तैयार माल ही है, वर्ना लाख मेहनत करने पर भी वह काम नहीं आती है, उलटे घाटा होता है।

[१३] किसके हाथ में सत्ता है, इसका लेखा-जोखा निकालिए। क्या आपने लेखा-जोखा निकाला है?

प्रश्नकर्ता : यह सब ज्ञान (आत्मज्ञान) के बाद मालूम पड़ता है।

दादाश्री : हाँ, पहले तो यह सब मालूम ही नहीं था न! सब उलझा हुआ था, सारा बहीखाता ही उलझा हुआ था। अब, मनुष्य अपनी बुद्धि से इसका लेखा-जोखा नहीं निकाल पाए। बुद्धि से इस बात का लेखा-जोखा निकल सके, ऐसा संभव ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह सब आप जो बता रहे हैं, ऐसी बातें पहले कभी सुनी ही नहीं थी।

दादाश्री : ऐसी बातें सुनने में ही नहीं आई थी न! कहीं भी ऐसी बातें नहीं होती। ये सारी बातें अपूर्व हैं। पहले सुनी नहीं हो, पढ़ी नहीं हो। यह बिलकुल नया तरीका है और तभी निबटारा हो सके वर्ना निबटारा कैसे हो सके?

[१४] हम मेहनत करें, फिर भी कुछ नहीं मिले, तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारे संयोग सीधे नहीं हैं। अब वहाँ ज्यादा ज़ोर लगाएँ तो उलटे घाटे में रहें, उसके बजाय हम अध्यात्म का कर लें। पिछले अवतार में यह नहीं किया इसीकी तो यह झँझट है। हमारा ज्ञान जिसे दिया गया हो उसकी तो बात ही अलग है, मगर हमारा ज्ञान (आत्मज्ञान) नहीं मिला हो तो भी कई लोग तो भगवान के भरोसे छोड़ देते हैं न? उनको क्या करना पड़े? 'भगवान जो करे वह सही,' वे ऐसा कहते हैं न? और [१५] बुद्धि से नापने जाए तो कभी काँटा मिले ऐसा नहीं है।

आड़ापन निकालने का उपाय

अज्ञानता में खुद की भूल हुई हो उसका खुद को पता चले कि, यह भूल हो गई मगर फिर भी यदि

कोई उसे पूछे कि, 'ऐसा क्यों किया?' तब वह ऐसा कहे कि, 'ऐसा करने जैसा था।' (मनुष्य) इतना आड़ा होता है।

वही सारा आड़ापन। भूल की खबर नहीं हो और उसे छिपाए, वह बात अलग है। खबर होने पर भी छिपाए वह सब से बड़ा आड़ापन। दूसरा आड़ापन ऐसा है, रात में यदि किसीके साथ हमारी अनबन हुई हो और सबेरे वह चाय लेकर आए तब हम कहे, 'मुझे तेरी चाय भी नहीं चाहिए और कुछ नहीं चाहिए' ऐसे, सबेरे फिर आड़ा होता है। अरे! रात की बात रात को ही खतम हो गई।

प्रश्नकर्ता : जिसका ताँता रहा हो उस आड़ेपन को तोड़ने का क्या रास्ता है?

दादाश्री : आड़ेपन को तोड़ने की ज़रूरत नहीं है। हमें 'दादा' की आज्ञा का पालन करना है। [१]'व्यवस्थित' माना मतलब कहा-सुनी नहीं रही। 'व्यवस्थित' के क्या माने हैं? [२]हमारा उनसे लड़ाई, झगड़ा कुछ भी नहीं रहा, याने 'व्यवस्थित'। 'व्यवस्थित' मानें 'व्यवस्थित'। 'व्यवस्थित' को पूर्णरूप से समझना पड़े और [३]इस जगत में दूसरों की तो भूल ही नहीं है। जितनी भूलें हैं वे सारी की सारी खुद की भूलों का परिणाम है। वर्ना, [४]जेबकतरा इतने सारे लोगों को नहीं आ मिला और हम से ही क्यों आ मिला? [५]हमारी भूल के बगैर आ नहीं मिलता।

लोभ भी आर्तध्यान करवाए

[१]लोभ आर्तध्यान करवाता है। यह सब अज्ञानता को लेकर होता है, जब कि ज्ञान में कोई प्रकृति बाधारूप नहीं है। [२]आत्मा को स्वभावदशा में कोई प्रकृति बाधारूप नहीं है। यदि किसी सेठ के हीरे चोरी हो गए तो उसे फिर नींद नहीं आए। माना कि हीरों की क़ीमत पचास हजार की है, मगर [३]सेठजी की मिल्कियत कितनी है? तब कहे, पच्चीस लाख की होगी। अब उसमें से पचास हजार के हीरे कम करके साढ़े चोबीस लाख की मिल्कियत तय नहीं कर देनी चाहिए? हम तो ऐसा ही किया करते थे। मेरी पूरी जिंदगी मैं बस ऐसा ही करता आया हूँ। [४]हमने तो तय ही कर रखा था कि जितने गए उतने कम करके रख देना।

जानकारी, 'एक्सपर्ट' होने से रोके

[१]हमें यह लिखना-करना कुछ नहीं आता है, पेन तक पकड़ना नहीं आता। हमें कुछ भी नहीं आता। संसार का कुछ भी नहीं आता, वह ज्ञानी। हम अबुध कहलाएँ।

मैं तो हरएक बाबत का अनुभव करके बता रहा हूँ। [२]आज सत्तर साल की उम्र हुई मगर आज तक मुझे दाढ़ी बनाना नहीं आया। लोग अपने मन में मानते हैं कि खुद को दाढ़ी बनाना आता है, वह सब अहंकार है। बहुत ही कम लोगों को दाढ़ी बनाना आता होगा। मुझे खुद को ही ऐसा लगता है कि यह रेझर कैसे पकड़ना? कितनी डिग्री पर पकड़ना? उसकी कोई जानकारी मुझे नहीं है। उसके एक्सपर्ट (निपुण) हम नहीं हुए हैं। [३]जब तक मैं एक्सपर्ट नहीं हुआ हूँ तब तक, 'मुझे आता नहीं है' ऐसा ही कहलाए।

धंधे में भी मैं अपने आपको 'एक्सपर्ट' मानता था। वह भी यह ज्ञान होने के बाद तटस्थ दृष्टि से देखा, लोको को धंधा करते देखा, तब मैं समझ गया कि मुझे ऐसा कुछ तो आता ही नहीं है। [४]यह तो केवल इगोइज़्म ही है। कोई पाँच आदमी मान्य करें, स्वीकार करें मतलब क्या सारी जानकारी आ गई?

वाणी, सामनेवाले के व्यवहाराधीन

आपको नहीं बोलना हो फिर भी बोला जाता है न? वह, सामनेवाले का व्यवहार ऐसा है उसके आधार पर ही निकलता है। कभी आप इस बात पर ध्यान देना। [१]कोई मनुष्य आपका नुकसान करता हो तब भी उनके लिए आपकी वाणी उलटी नहीं निकलेगी और [२]किसीने आपका ज़रा-सा भी नुकसान नहीं किया होगा फिर भी आपकी वाणी उलटी निकलती है, ऐसा क्यों? [३]तब कहें, ऐसा सामनेवाले के व्यवहाराधीन

होता है। [४] जैसे व्यवहार से लपेटा गया है ऐसे व्यवहार से खोला जा रहा है।

बोलने की सत्ता कितनी ?

सास सबेरे से शाम तक किच-किच करे और बहू भीतर ही भीतर झुंझलाती रहे। [१] वह यदि चार घंटे तक लगातार गालियाँ देती रहे और फिर हम उनसे कहें कि सासजी, फिर से वही गालियाँ, उसी क्रम से सुनाइये न! तो सुना पाएगी क्या? नहीं। क्यों? [२] क्योंकि वह तो रिकार्ड बोला (वाणी निकली)। यदि रिकार्ड बोले कि, 'चंचल में अक्ल नहीं है, चंचल में अक्ल नहीं है' तब क्या चंचल रिकार्ड से कहेगी कि, 'तेरे में अक्ल नहीं है?' वाणी तो रिकार्ड स्वरूप है, ऐसा स्पष्टीकरण देनेवाले हम ही हैं। [३] वाणी जड़ है, रिकार्ड ही है। यह जो (यांत्रिक) टेपरिकार्डर बजता है, तब उसका पहले टेप उतरता है या नहीं? वैसे ही, इस [४] वाणी की भी पूरी पट्टी उतर गई है और उसे संयोग मिलते ही निकलने लगती है, और इसे मनुष्य कहता है कि, 'मैं बोला।' कोई वकील कोर्ट में केस जीत जाए तो सब से कहता फिरे कि मैंने ऐसे प्लीडिंग (बहस) किया और वैसे किया, ऐसा करके केस जीत गया। तो फिर जब तू हारता है तब तेरा प्लीडिंग कहाँ जाता है? तब कहे कि मुझे यह दलील करनी थी मगर कर नहीं पाया। अरे, [५] तू नहीं बोलता, यह तो रिकार्ड बोलता है। [६] आगे से आयोजन करके बोलने जाए तो एक शब्द भी नहीं निकले।

कई बार ऐसा होता है या नहीं कि [७] आपने (बहू ने) दृढ निश्चय किया हो कि सास के आगे या पति के आगे कुछ बोलना नहीं है, फिर भी बोला जाता है कि नहीं? तब ये जो बोला जाता है, तो यह क्या है? [८] हमारी तो इच्छा नहीं थी। तब क्या पति की इच्छा थी कि पत्नी मुझे गाली दे? तब कौन बुलवाता है? [९] वह तो रिकार्ड बोलता है और एकबार यदि रिकार्ड उतर गया हो उसे कोई भी बदल नहीं सकता।

कई बार [१०] कोई मन में तय करके आया हो कि आज तो उसको ऐसी सुनाऊँगा और वैसा बोल दूँगा। और जब उस व्यक्ति के पास जाए और दूसरे पाँच आदमी को देखे [११] तो एक शब्द भी बोले बगैर वापस आए ऐसा होता है कि नहीं? बोलने जाए मगर शब्द ही नहीं निकले। यह वाणी तेरी सत्ता की ही हो तो तू धारणा करे वैसी ही वाणी निकले। मगर क्या ऐसा होता है? कैसे होगा?

ज़रूरत, सम्यक् वाणी की

प्रश्नकर्ता : सम्यक्वाणी का अर्थ क्या है?

दादाश्री : जो वाणी किसीको दु:ख नहीं पहुँचाए, त्रस्त नहीं करे, वह सम्यक्वाणी कहलाए। लोगों को त्रस्त करे, वह कठोरवाणी कहलाए।

मतलब, सम्यक्वाणी की ज़रूरत है। सम्यक् वाणी, वह तो बहुत मुख्य रूप से आराधन करने जैसी है। जिससे किसीको दु:ख नहीं हो वह ऐसी वाणी है और वही भगवान की सबसे बड़ी भक्ति है।

यदि सामनेवाला कहे कि, [१] 'आपमें अक्ल नहीं है' तब हम कहें कि, 'भैया, अक्ल तो ज़रा पहले से ही कम है। आपको जो काम हो वह मुझे बताइये न?' [२] मुझे जब लोग ऐसा कहते तब मैं कहता, 'भैया, पहले से ही नहीं है। आपको इसका आज पता चला, मगर मैं तो यह बात पहले से ही जानता हूँ।'

बरसे करुणा, वाणी में भी

स्याद्वाद वाणी कब उत्पन्न होती है? अहंकार की भूमिका पूर्ण होने पर [१] सारा जगत निर्दोष दिखाई दे, कोई दोषी दिखाई ही नहीं दे। हमें चोर भी दोषी नहीं दिखाई देता। लोग कहें कि, 'चोरी करना गुनाह है।' मगर [२] चोर ऐसा माने कि चोरी करना तो मेरा धर्म है। हमारे पास कोई किसी चोर को लेकर आए तो हम उसके कंधे पर हाथ रखकर एकांत में पूछें कि, 'भैया, क्या तुझे यह धंधा पसंद है?' फिर वह अपनी सारी हकीकत बतलाए। हमारे पास उसे भय नहीं लगता। मनुष्य भय की वजह से झूठ बोलता है।

फिर हम उसे समझाएँ कि, 'यह तू जो करता है उसकी क्या जिम्मेदारी बनती है? उसका क्या फल आता है? यह तुझे मालूम है?' और ३'वह चोरी करता है' ४ऐसा हमारे मन में नहीं होता। ऐसा यदि कभी हमारे मन में होता तो उसके मन पर असर पड़ता। ५प्रत्येक अपने-अपने धर्म में हैं। ६किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दु:खाना, वह स्याद्वाद वाणी। स्याद्वाद वाणी संपूर्ण होती है। हरएक की प्रकृति अलग-अलग होती है, फिर भी स्याद्वाद वाणी किसीकी भी प्रकृति को हरकत नहीं करती।

मोक्ष का मार्ग है शूरों का...

प्रश्नकर्ता : जब तक आत्मा का स्पष्ट वेदन नहीं होता तब तक अन्य कोई वेदना तो होती ही है न?

दादाश्री : १वेदना का स्वभाव ऐसा है कि यदि उसे पराई जाने तो फिर वेदन नहीं होता, उसे जाना ही करे (वह वेदना, उसे भीतर असर नहीं करे)। मगर २वेदना 'मुझे हुई' कहे तो वेदन करे और यह 'सहन नहीं होती' ऐसा कहा तो वेदना दस गुना ज्यादा लगे। यह 'सहन नहीं होती' ऐसा तो बोल ही नहीं सकते।

इस शरीर से ३हम कहें कि 'हे शरीर! हे मन! हे वाणी! तुम्हें कभी न कभी तो लोग जलाएँगे (मृत देह को), उसके बजाय हम ही जला डालें तो उसमें गलत क्या है।'

४जो स्वरूप हमारा नहीं है वहाँ पीड़ा कैसी? जो स्वरूप हमारा नहीं ऐसा 'ज्ञानीपुरुष' ने आपसे कहा, जो आपको बुद्धि से समझ में आया, फिर कैसी पीड़ा? इसलिए अब क्षत्रिय हो जाइये।

५आत्मा का स्वभाव कैसा है? जैसा चिंतन करे वैसा तुरंत ही हो जाए। सुखमय होने का चिंतन किया तो सुखमय हो जाए और दु:खमय चिंतन किया तो वैसा हो जाए। इसलिए बहुत ही जागृत रहना है।

प्रकृति नहीं बदलती, ज्ञान बदलिए

हरएक मनुष्य को इतना तैयार होना है कि कोई भी जगह उसे बोझरूप नहीं लगे।

१यदि आप सही हैं तो संसार के लोग आपका दोष नहीं निकालेंगे। शायद ऐसे लोग, कि २जिन्हें आपका मानना रास नहीं आता, वे आपके दोष निकाले, मगर सज्जन पुरुष दोष नहीं निकालते।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य, प्रकृति ही ऐसी लाया हो तो वह प्रकृति कैसे बदलेगी?

दादाश्री : नहीं, मगर साथ-साथ उसके लिए ऐसा ३डिसाइड करना चाहिए कि 'मेरी यह प्रकृति दु:खदायी है, इसलिए मुझे यह जो सुखदायी है ऐसे बरतना चाहिए', ऐसा डिसाइड (निश्चय) करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रकृति बदल सकती है?

दादाश्री : ४प्रकृति बदल नहीं सकती। मगर खुद का ज्ञान तो बदल सकता है न? ५प्रकृति तो अपना स्वभाव नहीं छोड़ती, मगर ६खुद का ज्ञान बदल सकता है और ज्ञान बदलने से बेचैनी बंद हो जाती है।

मोक्ष की 'मास्टर की', 'जगत निर्दोष'

१सारा जगत निर्दोष ही है। किस दृष्टि से निर्दोष है? तब कहे, यदि २शुद्धात्मा देखें तो निर्दोष ही है न! ३दोषी कौन है? बाहरी पुद्गल! वह पुद्गल... हमें क्या जानना है कि वह ४पुद्गल उदयकर्म के अधीन है आज। ५अपने खुद से अधीन नहीं है। अपनी खुद की इच्छा नहीं हो फिर भी करना पड़े ६इसलिए वह बेचारा निर्दोष ही है। इसलिए हमें सारा जगत, जीवमात्र निर्दोष दिखाई देता है। ७जगत स्वभाव से निर्दोष है। सारा का सारा जगत निर्दोष है। ८आपको जो दूसरों के दोष दिखाई देते हैं, वह आप में दोष होने के कारण ही दोष दिखाई देते हैं। जगत दोषी नहीं है यह दृष्टि यदि आपकी हो गई तभी आप मोक्ष में जा पाएँगे। जगत दोषी है ऐसी दृष्टि यदि रही तो आप यहाँ आराम से पड़े रहना।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

त्रिमंदिर अडालज में...

२४ अगस्त (रवि), रात्रि १० से १२ - **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम

२० सितम्बर (शनि), शाम ४-३० से ६-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**

२१ सितम्बर (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि** (आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग)

पर्यूषण पर्व - २७ अगस्त से ३ सितम्बर, २००८

पर्यूषण के दौरान गुजराती आप्तवाणी-६ तथा निजदोष दर्शन से निर्दोष पुस्तक पर सत्संग पारायण होगा।

सूचना : उपरोक्त कार्यक्रम में भाग लेने हेतु अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर या ०७९-३९८३०४०० पर कार्यक्रम से १५ दिन पहले रजिस्ट्रेशन अवश्य करवायें।

Pujya Deepakbhai's Singapore Satsang & Gnanvidhi

11 September (Thursday)	7-30 pm to 10 pm	Satsang for new mahatma
12 September (Friday)	7-30 pm to 10 pm	Satsang
13 September (Saturday)	10 am to 12-30 pm	Satsang
13 September (Saturday)	7-30 pm to 10 pm	**'Gnanvidhi'**
14 September (Sunday)	5 pm to 7 pm	Follow up of gnanvidhi
15 September (Monday)		Picnic

Venue: 18, Jalan Yasin, Singapore Jain Society Building, Singapore 417991
Email: sagarnilesh@yahoo.com.sg, **Mobile:** +6581129229

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत ✦ **'दूरदर्शन' (नेशनल) पर सुबह ७-३० से ८ (गुरु-शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह'**

✦ दूरदर्शन मराठी 'सह्याद्रि' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरू) - मराठी भाषा में

✦ गुजरात में 'दूरदर्शन' पर प्रतिदिन दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यो में डीडी-गुजराती पर उसी समय)

U.S.A. : ✦ 'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)

UK-Europe ✦ 'MA TV' पर प्रतिदिन सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत ✦ **'स्टार प्लस' पर हररोज सुबह ६-३० से ७ - विज्ञान, शाश्वत सुख का**

✦ 'Zee Gujarati' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

✦ 'दूरदर्शन' डीडी-गुजराती पर प्रतिदिन रात्रि ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

U.S.A. : ✦ **'SAHARA ONE' Mon to Fri 9 to 9-30 AM EST (In Gujarati)**

UK-Europe ✦ 'MA TV' पर प्रतिदिन शाम ५ से ५-३०

अगस्त २००८
वर्ष-३, अंक - १०

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/17258/05
Reg. No. GAMC - 1500
Valid up to 31-12-08
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

निजदोष देखने से पाओगे मुक्ति एक दिन

जगत आपका ही आयना है। जगत निर्दोष ही है, सदा से। लेकिन दूसरों के दोष नज़र आते हैं न? जितना दूसरों के दोष दिखाई देना बंद हो गया, वही मोक्ष की क्रिया है। दूसरों के दोष दिखाई देना वही संसार की अधिकरण क्रिया है। अर्थात् हमारा ही दोष, अन्य किसी का दोष नहीं है। खुद की भूल की वजह से ही सामनेवाला दोषी नज़र आता है। दूसरों के दोष दिखने बंद हो गये, उसे मोक्ष का टिकट मिल गया। वरना सारा जगत दूसरों के दोष ही देखता है। अर्थात् जगत खुद के दोष देखने के लिए है। दूसरों के दोष देखने से तो यह संसार खड़ा हुआ है। मोक्षार्थी खुद की भूल देखते हैं और संसार में भटकनेवाले दूसरों की भूल देखते हैं।

- दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chembers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964,27540216